mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-281 | पृष्ठ-8 | मूल्य-3 रूपये

सतना
10 अक्टूबर 2024 गुरुवार

दैनिक मीडियाऑडीटर
सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

अक्षय कुमार के...
@ पेज 5

संक्षिप्त समाचार

आठवीं मां महागौरी

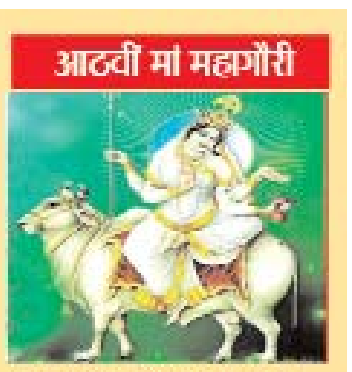

वह रूप जो कि सौन्दर्य से भरपूर है, प्रकाशमान है - पूर्ण रूप से सौंदर्य में डूबा हुआ है। प्रकृति के दो छोर या किनारे हैं - एक मां कालरात्रि जो अति भयावह, प्रलय के समान है, और दूसरा मां महागौरी जो अति सौन्दर्यवान, देदीप्यमान, शांत है - पूर्णतः करुणामयी, सबको आशीर्वाद देती हुईं।

जम्मू-कश्मीर में जवान का गोलियों से छलनी शव मिला

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग में सुरक्षा बलों को बुधवार को टेरिटोरियल आर्मी के एक जवान की बॉडी मिली है। उसके शरीर पर गोलियों के निशान हैं। आर्मी ने अभी किसी आतंकी हमले की बात नहीं कही है। जिस जवान की बॉडी मिली है, उसका नाम हिलाल अहमद भट है। भट अनंतनाग के मुखधामपोरा नौगाम के रहने वाले थे और 8 अक्टूबर को कोकेरनाग के काजवान फॉरेस्ट एरिया में मिलिट्री ऑपरेशन में गए थे। इसी दौरान वे लापता हो गए थे। उन्हें ढूंढने के लिए सुरक्षा बलों ने रात भर सर्च ऑपरेशन चलाया था। आज उनकी बॉडी अनंतनाग में सांगलान के जंगलों में मिली।

झारखंड में बिहार के 3 लोगों की पीट-पीटकर हत्या

चाईबासा (एजेंसी)। झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम में बिहार के 3 लोगों की हत्या कर दी गई। बताया जाता है कि बकरी चोरी के शक में तीनों को पीट-पीटकर मार डाला गया। वारदात को जानकारी पुलिस को मंगलवार की शाम में मिली। घटना अति नक्सल प्रभावित क्षेत्र जतरमा की है। मृतकों की पहचान शिवहर

जिले के कोल्हुआ ठीकाहा निवासी राकेश कुमार (26), रमेश कुमार (22) और मोतिहारी जिले के पताही निवासी तुलसी कुमार (24) के रूप में की गई है। राकेश और रमेश दोनों सगे भागे थे। ये तीनों लोग जतरमा के बंद गांव में रहकर फेरी का काम करते थे। वहीं, घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल में जुट गई है।

मुसलमानों की जातियों पर कभी क्यों नहीं बोलती कांग्रेस:पीएम

मोदी बोले-चुनाव जीतने के लिए हिंदुओं के बीच नफरत फैला रही कांग्रेस

पीएम बोले-कांग्रेस ने जीत के लिए हिंदू समाज में जहर घोलने का फॉर्मूला गढ़ा है

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह कहकर कांग्रेस के सामने बड़ी मुश्किल खड़ी कर दी है कि अगर उसे सामाजिक न्याय की चिंता है तो वह मुसलमानों की जातियों का जिक्र कभी क्यों नहीं करती है। प्रधानमंत्री की तरफ से मुस्लिम जातियों की बात करना बीजेपी की राजनीति में बड़े बदलाव का संकेत है। पीएम मोदी ने कांग्रेस पर हिंदुओं को जातियों में बांटने की षडयंत्रकारी कोशिशों का आरोप लगाया और कहा कि सत्ता में लौटने के लिए यह पार्टी हिंदू समाज में जहर बो रही है। मोदी महाराष्ट्र में 76 अरब की लागत वाली विभिन्न परियोजनाओं के शिलान्यास कार्यक्रम को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से संबोधित कर रहे थे।

मुसलमानों की जातियों पर कांग्रेस से पहली बार कड़ा सवाल

इसके बाद पीएम ने जो कहा, वह मुस्लिम वोट बैंक के लिए किसी भी सीमा को लांघने को तैयार कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दलों के लिए बड़ी चिंता का सबब बन सकता है। पीएम ने कहा कि कांग्रेस आखिर मुस्लिम जातियों की बात क्यों नहीं करती है। उन्होंने कहा, मोदी ने कांग्रेस के एक भी नेता ने आज तक कभी नहीं कहा कि हमारे मुस्लिम भाई-बहनों में कितनी जातियां होती हैं। मुस्लिम जातियों की बात आते ही कांग्रेस नेता मुंह पर ताला लगाकर बैठ जाते हैं। लेकिन जब भी हिंदू समाज की बात आती है तो कांग्रेस उनकी चर्चा जाति से ही शुरू करती है।

नफरत के हथकंडे से सत्ता में आना चाहती है कांग्रेस

पीएम मोदी ने कहा कि सत्ता में आने के लिए बेताब कांग्रेस नफरत फैलाने को ही अपना हथकंडा बना लिया है। उन्होंने कहा, जिस कांग्रेस ने देश पर इतने वर्षों तक राज किया, वो सत्ता में वापसी के लिए इतनी बेचैन है कि हर रोज नफरत की राजनीति कर रही है। कांग्रेस की पुरानी पीढ़ी के नेता भी बेबस हैं, असहाय हैं कि उनकी इस पार्टी की क्या स्थिति हो गई है। कांग्रेस की यह स्थिति होने वाली है, कांग्रेस नफरत फैलाने की सबसे बड़ी फैक्ट्री बनने वाली है, यह गांधीजी ने आजादी के बाद ही समझ लिया था। इसीलिए गांधीजी ने कहा था कि कांग्रेस को खत्म कर देना चाहिए। कांग्रेस खुद खत्म नहीं हुई, लेकिन आज देश को खत्म करने पर तुली हुई है।

हरियाणा के नतीजे हैरान करने वाले, चुनाव आयोग जाएंगे

- जम्मू-कश्मीर और हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजों पर बोले राहुल गांधी
- शिवसेना बोली-कांग्रेस जीत को हार में बदलना जानती है, टीएमसी भी हमलावर

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने जम्मू-कश्मीर और हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजों पर बुधवार को प्रतिक्रिया दी। उन्होंने एक्स पर पोस्ट में कहा कि हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजे हैरान करने वाले हैं।

राहुल ने लिखा, हम हरियाणा के अप्रत्याशित नतीजे का विश्लेषण कर रहे हैं। कई विधानसभा क्षेत्रों से शिकायतों आ रही हैं। हम चुनाव आयोग को इससे अवगत कराएंगे। हम हक का, सामाजिक और आर्थिक न्याय का, सच्चाई का यह संघर्ष जारी रखेंगे। राहुल ने जम्मू-कश्मीर में इंडिया गठबंधन की जीत पर लोगों का आभार जताया। हरियाणा में भाजपा से हार पर इंडिया ब्लॉक के नेताओं ने कांग्रेस की नीति पर सवाल उठाए।

शिवसेना (उद्धव गुट) ने अपने मुखपत्र सामना के संपादकीय में लिखा कि कांग्रेस जीत को हार में बदलना जानती है। टीएमसी नेता साकेत गोखले ने कांग्रेस का नाम लिए बिना कहा कि अहंकार और क्षेत्रीय दलों को हीन दृष्टि से देखना हार का कारण बना। शिवसेना ने सामना में लिखा, हरियाणा की हार से कांग्रेस को सीख लेने की जरूरत है। हरियाणा की हार कांग्रेस के ओवर कॉन्फिडेंस और राज्य के नेताओं के अहंकार का नतीजा है। हुड्डा ने नॉन जाट वोटर्स को साथ नहीं लिया।

पंजाब के निवासी हो गए एमपी के बीजेपी विधायक संजय पाठक!

- आधार कार्ड का पता देख उड़े होश, बैंक अधिकारी आए तो हुआ खुलासा
- एमपी में बीजेपी विधायक संजय पाठक के आधार कार्ड का बदला पता

कटनी (एजेंसी)। विजयराघवगढ़ विधानसभा सीट से बीजेपी विधायक संजय पाठक के साथ बड़ा कांड हो गया है। इसके बाद विधायक ने साजिश की आशंका व्यक्त की है। साथ ही मामले की जांच की मांग की है। उनके आधार कार्ड का एड्रेस बदल दिया गया है। एड्रेस बदलकर उस पर पंजाब मोहाली का पता दर्ज करवा दिया गया है। इसकी जानकारी लगते ही उनके होश उड़ गए हैं। मामला सामने आने के बाद विधायक संजय पाठक ने कहा है कि कुछ लोग कटनी से लेकर भोपाल तक के मेरे घर पर नजर रख रहे हैं। वहीं, जानकारी लगते ही विधायक ने प्रकरण की सूचना कलेक्टर दिलीप कुमार से लेकर एसपी अभिजीत रंजन को दी। साथ ही लिखित शिकायत भी की है। विधायक संजय पाठक ने इसे बड़ी साजिश बताते हुए कहा कि मेरे कटनी, जबलपुर सहित भोपाल वाले निवास में कुछ अज्ञात तत्वों द्वारा निगरानी की जा रही थी।

कनाडा में हालात भयावह हो गए हैं...

भारतीयों के सामने गहरा रहा गुजर-बसर का संकट

ओटावा (एजेंसी)। कनाडा से लगातार ऐसे वीडियो और तस्वीरें सामने आ रही हैं, जो देश में रोजगार के गहराते संकट को दिखाती हैं। कनाडा में कम होती नौकरियों और खासतौर से

भारतीयों को आ रहीं दिक्कतों पर एक बार फिर बहस तेज हो गई है। इसकी वजह कनाडा के तंदूरी फ्लेम रेस्तरां के बाहर से आया वीडियो है। इस वीडियो में रेस्तरां के बाहर भारतीय छात्रों की एक बड़ी कतार दिखाई दे रही है, जो नौकरी के लिए यहां आए हैं। बीडब्ल्यूपीपल की रिपोर्ट के मुताबिक, कनाडा और भारत में वायरल हो रहे इस वीडियो में तंदूरी फ्लेम रेस्तरां के बाहर जो छात्र दिख रहे हैं। उनमे से ज्यादातर भारत से हैं। ये वीडियो इसलिए भी लोगों का ध्यान खींच रहा है क्योंकि ये छात्र वेटर और सर्विस स्टाफ की नौकरी के लिए लाइन में लग रहे हैं। ये साफतौर पर कनाडा में अंतरराष्ट्रीय छात्रों के सामने आने वाली रोजगार की चुनौती को दिखाता है। कतार में खड़े छात्र भारतीय अगमवीर सिंह ने स्थिति पर निराशा जाहिर की।

यूपी में शिक्षामित्रों, अनुदेशकों और रसोइयों को तोहफा!

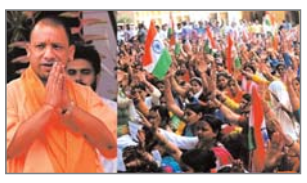

- योगी सरकार दीवाली पर दे सकती है बड़ी खुशखबरी
- मानदेय और भत्ते में बढ़ोतरी कर सकती है योगी सरकार

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार शिक्षामित्रों, अनुदेशकों और रसोइयों को दिवाली से पहले बड़ा तोहफा दे सकती है। प्रदेश के 1.40 लाख शिक्षामित्रों, 25 हजार अनुदेशकों और रसोइयों का मानदेय बढ़ाने की तैयारी है। मंगलवार को बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री संदीप सिंह के साथ अलग-अलग संगठनों की बैठक में इस बात पर सहमति बनी। मंत्री संदीप सिंह ने कहा कि मानदेय बढ़ाने का प्रस्ताव जल्द ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सामने रखा जाएगा। मंगलवार को विधानभवन में मंत्री संदीप सिंह के साथ शिक्षामित्रों के संगठन और अनुदेशकों की बैठक हुई। इस बैठक में शिक्षामित्रों, अनुदेशकों और रसोइयों के मानदेय वृद्धि, मूल विद्यालय में वापसी, मेडिकल सुविधा और मृत शिक्षामित्रों के परिवारों के समायोजन को लेकर बातचीत हुई।

न ईएमआई बढ़ेगी और न ही महंगे होंगे लोन

- आरबीआई ने रेपो रेट 6.5 फीसदी पर रखी बरकरार
- ब्याज दरों में लगातार 10वीं बार नहीं किया बदलाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने लगातार 10वीं बार ब्याज दरों में बदलाव नहीं किया है। आरबीआई ने ब्याज दरों को 6.5 फीसदी पर जस का तस रखा है। यानी लोन महंगे नहीं होंगे और आपकी ईएमआई भी नहीं बढ़ेगी। आरबीआई ने आखिरी बार फरवरी 2023 में दरें 0.25 फीसदी बढ़ाकर 6.5 फीसदी की थीं। 7 अक्टूबर से चल रही मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी की मीटिंग में लिए गए फैसलों की जानकारी आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने आज, यानी बुधवार को दी। ये मीटिंग हर दो महीने में होती है। आरबीआई ने इससे पहले अगस्त में हुई बैठक में ब्याज दरों में बदलाव नहीं किया था।

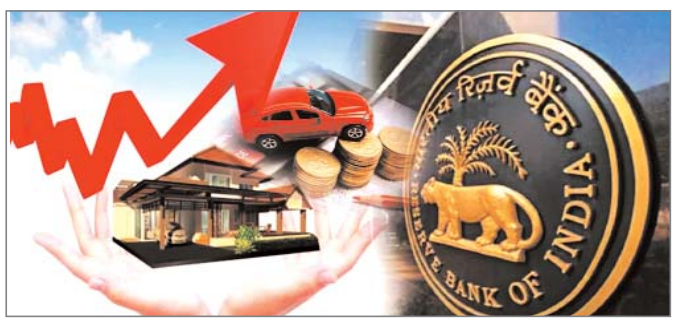

आरबीआई ने कोरोना के दौरान (27 मार्च 2020 से 9 अक्टूबर 2020) दो बार ब्याज दरों में 0.40 फीसदी की कटौती की। इसके बाद अगली 10 मीटिंग्स में सेंट्रल बैंक ने 5 बार ब्याज दरों में बढ़ोतरी की, चार बार कोई बदलाव नहीं किया और एक बार अगस्त 2022 में 0.50 फीसदी की

कटौती की। कोविड से पहले 6 फरवरी 2020 को रेपो रेट 5.15 फीसदी पर था। महंगाई को लेकर आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि खुदरा महंगाई के लक्ष्य 4 फीसदी पर बने हुए हैं। हालांकि, सितंबर महीने में महंगाई के आंकड़े बढ़े हुए लग सकते हैं। मौजूदा मैक्रो-इकोनॉमिक मापदंड संतुलित हैं। जीडीपी ग्रोथ को लेकर उन्होंने कहा कि कारोबारी साल 2025 के दौरान यह 7.2 फीसदी रह सकती है। आरबीआई ने यूपीआई लाइट की पर ट्रांजेक्शन लिमिट को 500 रुपए से बढ़ाकर 1,000 रुपए कर दिया है। वहीं, यूपीआई लाइट वॉलेट की सीमा 2,000 रुपए से बढ़ा कर 5,000 रुपए कर दी गई है। यानी अब वॉलेट में लोग 3,000 रुपए ज्यादा रख सकेंगे। इस सुविधा के जरिए यूपीआई पेमेंट में पिन की जरूरत नहीं पड़ती और आसानी से पेमेंट हो जाता है। वहीं, यूपीआई 123पे की लिमिट को बढ़ाकर 10,000 रुपए कर दिया गया है। ये सर्विस नॉन-स्मार्टफोन यूजर्स के लिए होती है। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के चीफ इन्वेस्टमेंट स्ट्रैटजिस्ट डॉ. वी के विजयकुमार ने कहा कि भारत में मार्च 2025 तक 0.50 फीसदी की कटौती हो सकती है। आरबीआई ने 8 फरवरी 2023 के बाद से ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया है। अभी रेपो रेट 6.50 फीसदी है। वॉलफोर्ट फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के फाउंडर विजय भराड़िया ने कहा की कि दर में कटौती एक साहसिक कदम है।

यूपी में उपचुनाव के लिए सपा ने घोषित किए 6 प्रत्याशी

- अखिलेश यादव ने पेश किया पीडीए पॉलिटिक्स का 'फैमिली वर्जन'
- करहल से तेज प्रताप, अयोध्या की मिल्कीपुर से अजीत प्रसाद को टिकट

लखनऊ (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की बुरी हार का असर उत्तर प्रदेश की राजनीति पर साफ दिखाई देने लगा है। उधर चुनाव परिणाम आए इधर चौबीस घंटे के अंदर ही अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी ने यूपी में 10 सीटों के लिए होने वाले विधानसभा उपचुनाव के लिए 6 सीटों पर अपने प्रत्याशी घोषित कर दिए। समाजवादी पार्टी ने जो लिस्ट जारी की है, उसमें ऊपर लिखा है- होगा पीडीए के नाम - एकजुट मतदान। लिस्ट में दो मुस्लिम प्रत्याशियों के साथ पीडीए का ख्याल तो रखा गया है लेकिन ज्यादातर टिकट नेताओं के परिवार को ही दिए गए हैं। इस लिस्ट में अखिलेश यादव के भतीजे, पूर्व सांसद की बेटी, पूर्व विधायक की पत्नी, वर्तमान सांसद की पत्नी, वर्तमान सांसद के पुत्र को प्रत्याशी बनाया गया है।

हरियाणा में एमपी-राजस्थान की तरह होंगे 2 डिप्टी सीएम

मंत्रिमंडल में 10 नए चेहरों को मिल सकती है जगह, सैनी ही होंगे मुख्यमंत्री

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा में भाजपा की जीत की हैट्रिक के बाद अब नई सरकार के गठन की कवायद तेज हो गई है। पार्टी सूत्र बताते हैं कि हरियाणा में भी पार्टी मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, ओडिशा की तरह दो डिप्टी सीएम का फॉर्मूला ला सकती है। वरिष्ठता के आधार पर पूर्व गृह मंत्री अनिल विज और एक ब्राह्मण विधायक को उपमुख्यमंत्री बनाया जा सकता है। भाजपा विधायक दल की बैठक गुरुवार को होगी। इसमें विधायक दल का नेता नायब सैनी को चुना जाना तय है। इसके लिए नायब सैनी दिल्ली भी गए। उधर, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर के दिल्ली निवास पर राज्य के चुनाव प्रभारी केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और सह प्रभारी बिप्लव देब ने रणनीति तैयार की है। इस बैठक में मंत्रियों के नामों सहित अन्य मामलों पर चर्चा की गई। हरियाणा में बीजेपी नई सरकार में डिप्टी सीएम फॉर्मूले को लाना चाहती है। इसकी सबसे बड़ी वजह सरकार में सीनियरिटी को लेकर होने वाला विवाद है। अभी अनिल विज नई सरकार में सबसे सीनियर नेता हैं। इसके अलावा वह सीएम बनने का दावा भी ठोक चुके हैं। ऐसे में उन्हें मैनेज करने के लिए पार्टी उन्हें डिप्टी सीएम बना सकती है। इनके अलावा एक ब्राह्मण विधायक को उपमुख्यमंत्री बनाया जा सकता है। नई सरकार में भाजपा के नए चेहरे शामिल हो सकते हैं। पुराने चेहरों में पूर्व गृह मंत्री अनिल विज, मूलचंद शर्मा और महिपाल ढांडा का नाम तो लगभग तय है। वहीं, नए चेहरों में जातीय और क्षेत्रीय संतुलन देखा जाएगा।

प्रदेश में इस वर्ष 4.50 लाख विद्यार्थियों को वितरित की जा रही हैं साइकिल

विभागीय बजट में 195 करोड़ रूपये का प्रावधान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में इस वर्ष 2024-25 में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा शासकीय स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को 4 लाख 50 हजार साइकिलें नि:शुल्क वितरित की जा रही हैं। इसके लिये विभागीय बजट में 195 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। साइकिल वितरण का कार्य इस वर्ष नवम्बर तक पूरा किया जाने के निर्देश जिला अधिकारियों को दिये गये हैं।

नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना में ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले विद्यार्थी, जो सरकारी स्कूलों में कक्षा 6वीं एवं 9वीं में अध्ययनरत हैं तथा वह जिस ग्राम के निवासी हैं, उस ग्राम में शासकीय माध्यमिक और हाई स्कूल संचालित न होने की वजह से विद्यार्थियों को सुविधाजनक तरीके से स्कूल पहुंचने के लिये साइकिल वितरित की जाती हैं। योजना में कक्षा 6वीं एवं 9वीं में प्रवेश लेने पर पात्र विद्यार्थी को साइकिल प्रदान की जा रही है। इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में कन्या छात्रावास में अध्ययनरत छात्राएं, जिनकी शाला छात्रावास से 2 किलोमीटर या अधिक दूरी पर है, उन्हें भी नि:शुल्क साइकिल प्रदाय की जा रही है। प्रदेश में वर्ष 2023-24 में इस योजना में 4 लाख 7 हजार विद्यार्थियों को नि:शुल्क साइकिल प्रदाय की गई थी।

पीएमश्री स्कूल नरसिंहपुर में 142 छात्राओं को वितरित की गई साइकिल - नरसिंहपुर जिले के पीएमश्री एमएलबी स्कूल नरसिंहपुर की 142 छात्राओं को नि:शुल्क साइकिल का वितरण किया गया। इन छात्राओं में ग्राम डोंगरगांव की छात्रा सोनम गोंड और कक्षा 9वीं की छात्रा अंकिता साहू, ग्राम पांसी की छात्रा शिवानी मोरिया व ग्राम भरवारा की छात्रा मुस्कान लोधी भी शामिल हैं।

ग्राम डोंगरगांव की छात्रा सोनम गोंड़ का कहना है कि घर से स्कूल दूर है। कभी-कभी बस छूट जाने के कारण समय पर विद्यालय नहीं आ पाती थी। अब शासन द्वारा नि:शुल्क साईकिल मिल जाने से अब वे समय पर स्कूल आ-जा सकेंगी। इसी तरह ग्राम डोंगरगांव की ही छात्रा अंकिता साहू बताती हैं कि वे पीएमश्री एमएलबी स्कूल नरसिंहपुर में कक्षा 9 वीं में अध्ययन करती हैं। उन्हें स्कूल आने-जाने में बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी बस में बहुत ज्यादा भीड़ हो जाने के कारण वे स्कूल नहीं जा पाती हैं। अब नि:शुल्क साईकिल मिल जाने से वे समय पर स्कूल आ-जा सकेंगी और अपनी पढ़ाई में रूकावट नहीं आने देंगी।

ग्राम पांसी की रहने वाली छात्रा शिवानी मोरिया व ग्राम भरवारा की छात्रा मुस्कान लोधी बताती हैं कि कभी-कभी पैसे के अभाव में वे बस का किराया नहीं दे पाती थी। गांव से स्कूल आने-जाने में बहुत समय लग जाता था। इससे उनकी पढ़ाई बाधित हो जाती थी। लेकिन अब साईकिल मिल जाने से वे समय पर स्कूल आ जा सकेंगी और अपनी पढ़ाई बिना किसी रूकावट से कर सकेंगी।

सेजल एजुकेशन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम 2024 का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। बांसुरी की मधुर धुन और गणेश जी के भजन के साथ 13 सितंबर शुक्रवार की शाम को सेजल एजुकेशन कल्चरल एंड वेल्फेयर सोसाइटी द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम 2024 का आयोजन छत्री पार्क मिनाल रेसीडेंसी में किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रिटायर्ड बैंक मैनेजर एच. एल. वर्मा एवं रेल्वे इंजीनियर अम्बादास राउत, विशेष अतिथि डॉ. चिंतामणि केसरी, कर्नल अरोरा, सब इंस्पेक्टर विजय सिंह, भेल इंजी शेखर सक्सेना, बैंक मैनेजर दिनेश गौतम ने कार्यक्रम मे अपनी उपस्थिति से प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन किया। विशेष प्रस्तुति मे पं श्री ब्रजेश कटारे ने बांसुरी की धुन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इंटर कॉलेज के गायन प्रतियोगी विजेता आभास भार्गव ने क्लासिकल गीतों से संगीतमय शाम में शमां बांध दिया। जहाँ ढोलक वादक राहुल विश्वकर्मा की संगति पर रिषभ शर्मा ने भजनों से भक्तिमय प्रस्तुति दी वहीं गिटार के स्ट्रिंग मे लक्ष्या शर्मा और अभिषेक द्वारा गाना गाकर अपनी कला का आनंदमय प्रदर्शन किया गया। लोकगीतों के साथ यूट्यूबर मैथली झा ने कार्यक्रम की अंतिम प्रस्तुति दी।

अतिथियों द्वारा कलाकारों को मोमेंटम प्रदान किया गया। संस्था के अध्यक्ष अविनाश शर्मा ने सभी अतिथियों, कलाकारोंऔर समारोह के सभी उपस्थित गणों का आभार प्रगट किया। और संस्था के सदस्यों को कार्यक्रम सफल बनाने मे योगदान देने के लिए अभिनंदन करते हुए समापन किया।

दिवाली पर्व पर नाप-तौल उपकरणों की जाँच का विशेष अभियान 9 से 30 अक्टूबर तक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। दशहरा एवं दिवाली पर्व पर उपभोक्ताओं के हितों को ध्यान में रखते हुए मिठाई, नमकीन, बर्तन, पेन्ट एवं सराफा व्यापारियों के यहाँ नाप-तौल उपकरणों की जाँच के लिये 9 से 30 अक्टूबर तक विशेष अभियान चलाया जायेगा। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा है कि उपभोक्ताओं का हित सर्वोपरि है। उपभोक्ताओं को सही कीमत और सही वजन की सामग्री मिलनी चाहिये। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिये विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के दौरान यह जाँच की जायेगी कि नाप-तौल उपकरण नियम अनुसार सत्यापित एवं मुद्रांकित हैं कि नहीं। मिठाई विक्रेता द्वारा मिठाई के साथ डिब्बे का वजन तौलना नियम विरुद्ध है। साथ ही यह भी जाँच की जायेगी कि पैक बंद वस्तुओं को एमआरपी से अधिक कीमत पर तो नहीं बेचा जा रहा है। जाँच अभियान में अनियमितता करने वाले व्यापारियों के विरुद्ध विधिक माप अधिनियम एवं नियमों के अंतर्गत प्रकरण पंजीबद्ध किये जायेंगे।

प्रदेश में आनंद का वातावरण बनाने जुटे हैं 565 आनंद लब

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में समाज के बीच सकारात्मकता एवं आनंद का वातावरण बनाने के लिए आनंद विभाग द्वारा समन्वित प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए प्रदेश में 565 आनंद क्लब पंजीकृत किए गए हैं। आनंद क्लब द्वारा जरूरतमंदों को रक्तदान, भोजन एवं सामग्री दान, आपदा में सहयोग, शिक्षा, बालिकाओं को आत्म रक्षा प्रशिक्षण, निराश्रितों की मदद एवं उपचार आदि का भी सहयोग प्रदान किया जा रहा है। आनंद क्लबों से 5 हजार से अधिक सदस्य जुड़ चुके हैं। राज्य आनंद संस्थान के कार्यक्रम निदेशक श्री सत्य प्रकाश आर्य ने बताया कि स्वयं एवं परिवेश के प्रति जागरूकता बढ़ाकर हम प्रसन्न रह सकते हैं। इससे सामाजिक समरसता और खुशहाली संभव होती है। आनंद क्लब की पहल इस विचार पर आधारित है कि लोगों को पहले स्वयं आनंदमयी जीवन जीने का कौशल सीखना चाहिए। इसका जीवन में अनुसरण कर सामूहिक रूप से क्लब बनाकर अन्य लोगों का जीवन आनंदमय बनाने के प्रयास करना चाहिए। राज्य आनंद संस्थान, आनंद और खुशहाली का वातावरण बनाने के लिये आनंद क्लब गठित करने का कार्य लगातार कर रहा है। कोई भी व्यक्ति जो आनंदक के रूप में पंजीकृत है वह आनंद क्लब प्रारंभ कर सकता है। आनंदक के रूप में पंजीकृत होने की सुविधा राज्य आनंद संस्थान की वेबसाइटपर उपलब्ध है। आनंद क्लब का गठन 5 इच्छुक व्यक्ति मिलकर कर सकते हैं।

बेरोजगारी कम करने में एमएसएमई की बड़ी भूमिका

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग की समीक्षा में विभागीय योजनाओं के सफल संचालन एवं क्रियान्वयन पर संतोष जताया है। विगत दिनों हुई समीक्षा में बताया गया कि प्रदेश में दर्ज 14 लाख 39 हजार सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों द्वारा लगभग 75 लाख 10 हजार व्यक्ति?यों को रोजगार दिया गया है। इन छोटी-छोटी इकाईयों में 48 हजार 710 करोड़ का निवेश हुआ है। मध्यप्रदेश में बेरोजगारी दर को कम करने में एमएसएमई विभाग की सर्वाधिक बड़ी भूमिका है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एमएसएमई मंत्री श्री चैतन्य कुमार काश्यप से कहा है कि सर्वाधिक रोजगार सृजन की संवाहक सूक्ष्म, लघु, मध्यम उद्यम इकाईयों का प्रदेश में सुव्यवस्थित विकास करें और अगले 5 वर्ष में 70 से 80 लाख एमएसएमई स्थापना का लक्ष्य लेकर कार्ययोजना बनायें। उल्लेखनीय है कि राज्य शासन सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को सहयोग करने के साथ इनका बड़े उद्योगों में संवर्धन कराने के लिए भी योजनाओं के माध्यम से सहायता करती है। प्रदेश में सतत् रूप से इन उद्यमों के लिए औद्योगिक क्षेत्रों का प्रबंधन और विकास किया जा रहा है। शासन की नीति अनुसार संयंत्र एवं मशीनरी अथवा उद्योग में एक करोड़ रूपये के निवेश तथा 5 करोड़ रूपये तक के वार्षिक टर्न ओवर को सूक्ष्म, 10 करोड़ रूपये तक के निवेश और 50 करोड़ रूपये तक के टर्न ओवर को लघु और 50 करोड़ तक के निवेश और 250 करोड़ रूपए के टर्न-ओवर को मध्यम उद्यम के दायरे में रखा गया है। मध्यप्रदेश एमएसएमई प्रोत्साहन योजना में इकाईयों को सामान्यत- 40 प्रतिशत अनुदान तथा खाद्य प्र-संस्करण उद्योगों को 60 प्रतिशत तक अनुदान दिया जाता है। प्रोत्साहन योजना के तहत वर्ष 2021-22 में 463 उद्यमों, 22-23 में 483, 23-24 में 774 इकाईयों को लाभ दिया गया है। इस वित्त वर्ष में अब तक 616 इकाईयों के प्रस्ताव प्राप्त हुए है। प्रदेश में अब तक उत्पादन, सेवा और व्यापार में वर्ष 2020-21 में 1 लाख 11 हजार 716 एमएसएमई इकाईयां, वर्ष 2021-22 में 2 लाख 45 हजार 341, वर्ष 2022-23 में 3 लाख 60 हजार 442, और गत वित्त वर्ष 2023-24 में 4 लाख 57 हजार 499 एमएसएमई इकाईयां पंजीबद्ध हुई है।

सहकारिता के कार्यालयों को किया जाये रिडिजाइन-मंत्री श्री सारंग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने निर्देश दिये है कि सहकारिता विभाग से संबंधित सभी कार्यालयों को रिडिजाइन किया जाये। ऑफिस को अपडेट रखे, उसका डिजिटाइजेशन भी हो। मोटिवेशन स्लोगन लगाये जाये। सभी प्रकार के पेक्स के माध्यम से किसानों को भी शिक्षित करने का कार्य किया जाये। वहाँ उनके उपयोग की जानकारी हो। डिसप्ले के माध्यम से किसानों की हित की जानकारी का प्रदर्शन हो। मंत्री श्री सारंग ने मंगलवार को मंत्रालय में सहकारिता विभाग की गतिविधियों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि उपार्जन के लिये सर्वेयर और समिति प्रबंधक की हाई क्लास ट्रेनिंग करवाई जाये। इसके लिये कम से कम 600 चयनितों का उपयोगी प्रशिक्षण हो। उपार्जन के समय पानी, बैठक व्यवस्था आदि का इंतजाम भी करें। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि सारे विभागीय काम टाइम लिमिट में हो। सभी प्रक्रिया पारदर्शी हो। उन्होंने बैठक में स्वच्छता पखवाड़े में विभाग द्वारा किये गये कार्यों का प्रेजेन्टेशन भी देखा। साथ ही निर्देश दिये कि अच्छे काम करने वाले को अवार्ड/रिवार्ड दिया जाये। इससे अधिकारी-कर्मचारी प्रोत्साहित होंगे। श्री सारंग ने कहा कि सहकारिता के प्रोडक्ट सेल करने के लिये एक नियत स्थान का चयन भी किया जाये, जिसमें आसानी से एक ही स्थान पर सभी तरह के प्रोडक्ट उपलब्ध रहें। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि अधिकारी समय-समय पर समितियों का निरीक्षण करें। उन्होंने कहा कि वे स्वयं भी समितियों का निरीक्षण करेंगे।

प्रधानमंत्री मातृ-वंदना योजना - मातृत्व का सम्मान और सुरक्षित भविष्य की ओर बढ़ते कदम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। माँ बनना हर महिला के जीवन का सबसे खास और भावनात्मक अनुभव होता है। यह एक ऐसा सफर है, जो न केवल शारीरिक बदलाव लाता है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी गहराई तक प्रभावित करता है। सतना जिले की ग्राम बिलाईखार, ग्राम पंचायत सूरजपुरा निवासी पूजा यादव भी इस बात का समर्थन करती हैं। पूजा कहती है कि माँ बनना जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव होता है। इस वक्त मिली उचित सलाह और सहायता बहुत मददगार साबित होती है। भारत में गर्भवती महिलाओं की सुरक्षा, पोषण और स्वास्थ्य का ख्याल रखने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री मातृ-वंदना योजना की शुरूआत की गई थी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का कहना है कि प्रधानमंत्री मातृ-वंदना योजना एक भावनात्मक रूप से संवेदनशील पहल है, जो हर गर्भवती महिला के भीतर सुरक्षा और आशा की भावना को जन्म देती है। इससे वह न केवल अपने लिये, बल्कि अपने बच्चे के भविष्य के लिये भी एक स्वस्थ और सुरक्षित जीवन की नींव रख सकती है। पूजा कहती हैं कि जब पहली बार वे गर्भवती हुईं, तो उन्हें आँगनवाड़ी कार्यकर्ता के माध्यम से प्रधानमंत्री मातृ-वंदना योजना के बारे में जानकारी मिली। पूजा को गर्भावस्था के पंजीकरण के समय तीन हजार रुपये की पहली किश्त मिली। इस दौरान पूजा ने पोषक तत्वों से भरपूर फल, सब्जियाँ और अन्य जरूरत के सामान की खरीददारी की। पूरे गर्भावस्था के दौरान पूजा स्वस्थ रही और इसके बाद उन्होंने एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया।

मध्यप्रदेश एटीएस ने अवैध हथियार के कारोबार से जुड़े अंतर्राज्यीय गिरोह के सदस्य को किया गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रदेश में शांति एवं कानून व्यवस्था के सशक्तिकरण और अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण के लिए पुलिस को दिए गये निर्देशों के परिपालन में मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा राज्य में लूट, चोरी, नकबजनी, अवैध हथियारों के निर्माण एवं विक्रय जैसी घटनाओं में लिप्त अपराधियों पर नकेल कसने के लिये निरंतर सख्त कार्रवाई की जा रही है। इसी तारतम्य में 07 अक्टूबर, 2024 को मध्यप्रदेश एटीएस ने आगरा-मुम्बई रोड, इंदौर से अवैध शस्त्र निर्माण एवं विक्रय करने वाले बड़वानी जिले के पलसूद निवासी संदिग्ध नेपाल सिंह पिता वल्लम सिंह टकराना उम्र 33 वर्ष निवासी ग्राम उन्डीखोदरी पलसूद तहसील राजपुर को हिरासत में लेकर उसके कब्जे से 2 देशी पिस्टल मय मैग्जीन तथा 200 से अधिक बैरल एवं शटर नली बरामद करने में सफलता प्राप्त की है। आरोपी ने प्रारंभिक पूछताछ में पुलिस को बताया कि, उक्त पिस्टल व बैरल विक्रय करने की नीयत से सूरत (गुजरात) से मंगवाई थी। आरोपी नेपाल सिंह, सिकलीगर समुदाय से है तथा अवैध हथियार निर्माण एवं अंतर्राज्यीय तस्कर गिरोहों से जुड़ा हुआ है।

पश्चिम क्षेत्र विद्युत कंपनी की उज्जैन लेब को मिला राष्ट्रीय स्तर का प्रमाणीकरण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा उज्जैन में स्थापित टेस्टिंग लेब को नेशनल एक्रिडिएशन बोर्ड फार टेस्टिंग कालिब्रेशन लेबोरेटरीज प्रमाण पत्र मिला है। आत्म-निर्भर भारत के उद्देश्य से कंपनी की जरूरत की विद्युत सामग्री की जांच के लिए अब इस तरह की एनएबीएल प्रयोगशाला स्थानीय स्तर पर ही होने से अन्यत्र सामग्री भेजने में लगने वाला समय, शुल्क बचेगा। कंपनी की प्रबंध निदेशक सुश्री रजनी सिहं और मुख्य महाप्रबंधक श्री प्रकाश सिंह चौहान ने उज्जैन की लेब को आगामी चार वर्षों के लिए राष्ट्रीय स्तर का प्रमाण पत्र मिलने पर बधाई दी है। अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री आरके नेगी ने बताया कि उक्त लेब पांच करोड़ की लागत से उज्जैन के शंकरपुर में तैयार हुई है।

जन, जल, जंगल और जमीन के अधिकारों को समझ रहे जनजातीय परिवार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के अनुसूचित क्षेत्रों में निवासरत जनजातियों को जन, जल, जंगल, जमीन और श्रमिकों के अधिकारों की जानकारी देकर इनके संरक्षण एवं जनजातीय सांस्कृतिक परम्पराओं की सुरक्षा के लिये अब से करीब दो साल पहले एक बड़ा कदम उठाया गया। जनजातीय समुदाय के आद्य गौरव के प्रतीक भगवान बिरसा मुण्डा के जन्म-दिवस पर मध्यप्रदेश में 15 नवंबर 2022 को पंचायत के प्रावधान (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) नियम-2022 या कहें पेसा एक्ट लागू किया गया। मध्यप्रदेश के 20 जिलो के 88 विकासखंडों की 5133 ग्राम पंचायत क्षेत्रों के 11 हजार 596 गांव पेसा क्षेत्र में आते हैं। प्रदेश के अलीराजपुर, झाबुआ, मंडला, अनूपपुर और बड़वानी पूर्ण पेसा जिले हैं। वहीं बालाघाट बैतूल, बुरहानपुर, छिंदवाड़ा, धार, खंडवा, नर्मदापुरम, खरगौन, सिवनी, शहडोल, श्योपुर, सीधी उमरिया एवं रतलाम आंशिक पेसा जिलो की श्रेणी में आते हैं। पेसा अधिनियम के क्रियान्वयन से अनूपपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के परिवेश में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दे रहा है। यहां ग्रामीणों को उनके अधिकारों एवं रोजगार के बारे में जानकारी देकर गांव में ही रोजगार तथा हितग्राहीमूलक योजनाओं का लाभ दिलाया जा रहा है। अनूपपुर जिले की जनपद पंचायत पुष्पराजगढ़ की ग्राम पंचायत दमेहडी में पेसा अधिनियम का सकारात्मक प्रभाव साफ-साफ देखने को मिल रहा है। यहां के जनजातीय समुदाय-जन, जल, जंगल एवं जमीन के अधिकार को समझ चुके हैं तथा शासन की मंशा के अनुरूप पेसा अधिनियम से अपनी उन्नति की राह पर अग्रसर हो रहे हैं। यहां के ग्रामीण आपसी भाईचारे से मिल-जुलकर रह रहे हैं।

यहां लोगों का अपने जंगल व वन्यजीवों के साथ साहचर्य जीवन व्यवहार भी बेहद सौहार्दपूर्ण हो गया है। पेसा अधिनियम लागू होने के पहले इस ग्राम पंचायत में बहुत ज्यादा विपरीत परिस्थितियां हुआ करती थीं। लोग हमेशा ही आपसी लड़ाई-झगड़े और कोर्ट-कचहरी में फंसे रहते थे। पेसा अधिनियम के कारण गांव की स्थिति में बदलाव हुआ है। अब गांव के छोटे-मोटे विवादों को मिल-बैठकर गांव में ही सुलझा लिया जाता है। यहां के ग्रामीण बताते हैं कि पहले पुलिस केस होता था, उसके बाद वकीलों तथा कोर्ट के चक्कर लगा-लगाकर आखिरी विकल्प समझौता करना ही होता था, तब तक हमें बेहद परेशान होना पड़ता था। अब इन मुसीबतों से हमें छुटकारा मिल गया है। ग्राम दमेहडी के लोगों का कहना है कि जब से पेसा एक्ट लागू हुआ है, तब से गांव में शांति, उन्नति, प्रगति एवं आपसी भाईचारे का माहौल कायम है। अब गांव का झगड़ा विवाद निवारण समिति द्वारा आसानी से सुलझा लिया जाता है। यदि कोई व्यक्ति थाने चला भी जाता है, तो लोकल थाने की पुलिस द्वारा शांति एवं विवाद निवारण समिति के सदस्यों को सूचना दी जाती है। संज्ञान में आते ही ग्राम सभा द्वारा उस व्यक्ति को समझाकर मामले का निपटारा गांव में ही कर लिया जाता है। जहां पेसा एक्ट लागू होने के बाद गांव के लगभग 25-30 लड़ाई-झगड़ों में शांति एवं विवाद निवारण समिति द्वारा समझौता करा दिया गया है।

सीईओ जिला पंचायत ने कुसमी में विभागीय योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की

योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही व अनियमितता नहीं की जायेगी स्वीकार

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सीधी अंशुमान राज द्वारा जनपद पंचायत कुसमी के सभागार में पंचायत एवं ग्रामीण विकास की विभिन्न योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की गई। समीक्षा बैठक में जनपद पंचायत कुसमी के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, परियोजना अधिकारी मनरेगा एवं आवास, एस.पी.ओ.एस.बी.एम., सहायक यंत्री मनरेगा, अतिरिक्त कार्यर्₹ म अधिकारी मनरेगा, ब्लाक समन्वयक आवास एवं एस.बी.एम, पी.सी.ओ., उपयंत्री समस्त तथा ग्राम पंचायतों के सचिव तथा ग्राम रोजगार सहायक उपस्थित रहे।

समीक्षा बैठक के दौरान मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा मनरेगा योजनान्तर्गत माह सितंबर 2024 तक के लक्ष्य के विरुद्ध मानव दिवस सृजन, एसटी, एससी तथा महिला श्रमिकों को 100 दिवस रोजगार उपलब्ध कराने, गौशाला, अमृत सरोवर तथा अपूर्ण आंगनवाड़ी, वित्तीय वर्ष 2022-23 तथा उसके पूर्व के कार्यों की पूर्णता की प्रगति की समीक्षा करते हुए लक्ष्य पूर्ति हेतु आवश्यक निर्देश दिये गये। इसी प्रकार प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना के अंतर्गत प्रदत्त लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति, पी.एम. जनमन आवास पूर्णता एवं अपूर्ण आवास निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए लक्ष्य प्राप्ति हेतु आवश्यक कार्यवाही के निर्देश दिये गये। समीक्षा बैठक के दौरान मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण, पंचायती राज, एस.आर.एल.एम., सामाजिक न्याय एवं निःशक्त जन कल्याण, सम्बल योजना तथा सी.एम. हेल्पलाईन की प्रगति की समीक्षा की गई। मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारियों को शासन की गाईड लाइन का पालन करते हुए समस्त योजनाओं में प्रगति करने के निर्देश दिये गये। साथ ही सचेत किया गया कि योजनाओं के रि यान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही व अनियमितता स्वीकार नहीं की जावेगी। समीक्षा बैठक के उपरांत मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा सामुदायिक स्वच्छता परिसर भगवार का निरीक्षण किया गया। परिसर में साफ़सफ़ाई तथा पानी की समुचित व्यवस्था न होने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए आवश्यक सुधार के निर्देश दिये गये। तत्पश्चात ग्राम पंचायत कोड़ार में देवकी नंदन गौशाला का निरीक्षण किया गया।

शाहपुर थाना क्षेत्र के गौरी गांव में दो पक्षों के बीच मारपीट में आधा दर्जन घायल

पुलिस अधीक्षक से मिलकर लगाई न्याय की गुहार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शाहपुर थाना क्षेत्र के गौरी गांव में दो पक्षों के बीच पारिवारिक विवाद को लेकर मारपीट हो गई जिसमें आधा दर्जन लोग घायल हो गए दोनों पक्ष पुलिस थाना शाहपुर पहुंचकर रिपोर्ट लिखाई है।पर एक पक्ष जिसमें ज्यादा लोग घायल हुए थे उन्होंने शाहपुर पुलिस पर गंभीर आरोप लगाते हुए पुलिस अधीक्षक रसना ठाकुर को आवेदन देकर न्याय की गुहार लगाई है।फरियादियों का कहना है कि शाहपुर थाना प्रभारी भेदभाव पूर्ण कार्यवाही कर रहे हैं।हमारे द्वारा जो रिपोर्ट घटना के समय लिखाई गई थी वह रिपोर्ट पुलिस द्वारा नहीं लिखी गई।पुलिस आरोपियों को बचाने के लिए पूरा प्रयास कर रही है।फरियादियों का कहना है कि आरोपियों ने तलवार और टागी से हमला किया था जिसके चोट के भी निशान है पर शाहपुर पुलिस ने सामान्य धाराओं में मामला दर्ज करते हुए चलता कर दिया। यह पूरी घटना 5 अक्टूबर की बताई जा रही है। जहां पारिवारिक विवाद में दो यादव परिवार के बीच ही मारपीट हो गई। जिसमें एक पक्ष से छोटे लाल यादव गोलू यादव मोनू यादव गिरीश यादव रेणू यादव गुड्डू यादव कुल 6 लोग घायल हो गये। सभी घायल पुलिस अधीक्षक मऊगंज कार्यालय पहुंचकर आवेदन पत्र देते हुऐ न्याय की गुहार लगाई है।

चर्चाओं में हमेशा गर्म रहता है शाहपुर थाना: मऊगंज जिले का शाहपुर पुलिस थाना जो अक्सर अपनी क्रियाकलापों की वजह से चर्चा में रहता है।मऊगंज जिले का चर्चित शिखा कांड भी इसी थाना का मामला है जो अभी भी ठंडा नही हुआ है।इसके साथ ही इसी शाहपुर थाना क्षेत्र के बराव गांव में 2 सप्ताह पूर्व ग्रामीणों ने पुलिस पर ही हमला कर घायल कर दिया था। इस थाना क्षेत्र के फरियादियों पर वहां पदस्थ थाना प्रभारी सहित कर्मचारियों पर विश्वास ही नहीं होता कि हमारे साथ न्याय करेंगे जिसकी वजह से पुलिस अधीक्षक कार्यालय आने वाले पीड़ितों की संख्या बढ़ रही है।

नहर में गिरने से एक व्यक्ति की मौत,रेस्क्यू अभियान से 14 घंटे बाद मिला शव, परिजन मांग रहे मुआवजा

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला मुख्यालय से करीब 80 किलोमीटर की दूरी पर अल्ट्रा-टेक सीमेंट प्लांट स्थित है। प्लांट के बगल से ही बिहार और उत्तर प्रदेश के लिए बाणसागर नहर बनाई गई है। जहां दो प्रदेशों को इसी नहर के माध्यम से सोन नदी के पानी की सप्लाई होती है। लेकिन यह नहर अब हादसे की नहर के नाम से जाना जाता है।

कुछ सालों पहले नहर हादसे में एक बस दुर्घटना का शिकार हो गया था, जिसमें 62 लोगों की मौत हो गई थी। ठीक उसी जगह पर एक बार फिर से सड़क हादसा हुआ। जिसमें एक चार पहिया वाहन अनियंत्रित होकर नहर में गिर गई। नहर का रास्ता सकरा होने की वजह से यहां हादसे होना आम बात लगती है।

मंगलवार की देर शाम अल्ट्रा-टेक सीमेंट प्लांट से डीजल लेने के लिए कंपनी के ड्राइवर रामावतार साकेत चार पहिया वाहन कैंपर लेकर निकले हुए थे। जहां उनकी गाड़ी अनियंत्रित होकर सीधे नहर में समा गई। इसके बाद उनका पता नहीं चल पा रहा था। वहीं आज सुबह रेस्क्यू का अभियान शुरू किया। जिसके बाद सुबह करीब 10 बजे उसके शव को बाहर निकाल लिया गया।

परिजन कर रहे मुआवजा की मांग: इसके बाद गुस्साए परिजन मौके पर पहुंचे और मुआवजे की मांग पर अड़े हुए हैं। उन्होंने शव को लेने से इनकार कर दिया। जिसके बाद थाना की पुलिस और अल्ट्रा-टेक सीमेंट प्लांट के कर्मचारी मौके पर पहुंचकर उन्हें समझाने की कोशिश कर रहे हैं।मृतक के पिता भगवानदिन साकेत ने बताया कि मेरे बेटे के दो लड़के और एक लड़की हैं जो बहुत छोटे हैं। इसलिए अल्ट्राटेक सीमेंट प्लांट और अधिकारी मिलकर 50 लाख रुपए मुआवजा दे और मेरी बहू को नौकरी दें तब जाकर हम यह हड़ताल खत्म करेंगे।

वहीं पूरे मामले को लेकर रामपुर नैकिन थाना प्रभारी सुधांशु तिवारी ने जानकारी देते हुए बताया है कि मंगलवार देर शाम का यह मामला है। जैसे ही जानकारी हमें लगी हमने तुरंत चौकी प्रभारी को सूचित कर मौके पर भेज दिया। यहां हड़ताल होने की बात पर मैं समझने की अब कोशिश कर रहा हूं लेकिन परिजन अपनी बात पर अड़े हुए हैं। मृतक के शव को बाहर निकाल लिया गया और पोस्टमॉर्टम करने की तैयारी की जा रही है।

मंत्री जितेंद्र लिटोरिया ने मेडिकल स्टाफ और दवाइयों का किया अवलोकन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)।भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी की ओर संचालित प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र में बुधवार को मध्य प्रदेश खादी ग्रामोद्योग के चेयरमैन और रीवा और शहडोल संभाग के पूर्व संभागीय संगठन मंत्री जितेंद्र लिटोरिया पहुंचे। उन्होंने औषधि केंद्र की दवाइयां का अवलोकन बुधवार दोपहर किया।

औषधि केंद्र को बताया संजीवनी: मंत्री जितेंद्र लिटोरिया ने कहा कि प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र की दवाइयां लोगों के लिए संजीवनी है। इस केंद्र का उद्देश्य उच्च गुणवत्ता और अच्छी दवाइयां आम लोगों के लिए सस्ती दरों पर उपलब्ध कराना है। पिछले वर्षों में इस प्रकार के औषधि केंद्र से आम जनों के 25 हजार करोड़ रुपए बचाए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह महत्वाकांक्षी परियोजना है।

इस अवसर पर जिला रेड क्रॉस सोसाइटी के सचिव कृष्णकांत द्विवेदी, प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र के लाइसेंस सुरेंद्र मणि दुबे, भाजपा जिला उपाध्यक्ष सुरेश सिंह चौहान, संदीप द्विवेदी, जन औषधि केंद्र की फार्मासिस्ट अनुपमा त्रिपाठी, पूजा सिंह बघेल, सुनील मिश्रा, शिवम सिंह सहित अनेक लोग उपस्थित रहे हैं।

हिनौती गोधाम गौशाला में तार फेंसिंग के लिये लेआउट जारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।गंगेव जनपद अध्यक्ष विकास तिवारी जी द्वारा ग्रामीण यांत्रिकी सेवा क्रमांक 01 को जनपद पंचायत मद से जो राशि दी गई थी जिस पर गौशाला हिनौती आज ग्रामीण यांत्रिकी सेवा क्रमांक 01 अधिकारियों द्वारा लेआउट किया गया, लेआउट के दौरान एग्जीक्यूटिव इंजीनियर टीपी गुर्दमान सहित सहायक यंत्री जनपद पंचायत गंगेव निखिल मिश्रा सहित पंचायत इंजीनियर प्रवीण पांडे मौजूद रहे।।

आपको बता दे कुछ महीना पहले रीवा जिले के विधायक एवं डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ला जी द्वारा हिनौती ग्राम के गदही नामक जगह का नाम बदलकर गोधाम कर दिया था साथ ही गौ वंश वन विहार हेतु भूमि पूजन किया था। भूमि पूजन के दौरान जनपद अध्यक्ष विकास तिवारी द्वारा जनपद पंचायत निधि से 20 लाख रुपए देने की घोषणा की थी जिस पर उन्होंने अपने घोषणा अनुसार अपने जनपद निधि से राशि भी ₹श्वस् विभाग को उपलब्ध करा दी।राशि उपलब्ध होते ही निर्माण को लेकर सजक दिखे ईई टीपी गुर्दमान। आपको बता दे एग्जीक्यूटिव इंजीनियर द्वारा अपनी टीम को लेकर हिनौती ग्राम पंचायत पहुंचकर गौशाला क्षेत्र में निर्माण क्षेत्र का निरीक्षण का हल्का पटवारी की नाप करा कर अपने टीम के द्वारा तार फेंसिंग निर्माण हेतु चूना डाल कर लेआउट किया गया आपको बता दे लेआउट के दौरान सामाजिक कार्यकर्ता देवेंद्र तिवारी सहित अशोक सिंह एवं अन्य पंचायत के लोग मौजूद रहे।

वही एजुकेटिव इंजीनियर से जानकारी मांगी तो उनके द्वारा बताया गया हम गौशालाओं के विकास को लेकर बेहद संवेदनशील है हमें शासन सहित जनप्रतिनिधियों से जो भी गौशाला विकाश हेतु राशि प्राप्त होगी उसे हम जल्द से जल्द निर्माण कार्य खर्च करेंगे हमारी मनसा यह है कि जल्द से जल्द तार फेंसिंग का हो जाए जिससे गाय माता सहित किसानों को भी राहत मिलेगी।

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर पर व्याख्यानमाला आयोजित

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश शासन के निर्देशन में प्रधानमंत्री कॉलेज आफ एक्सीलेंस संजय गांधी स्मृति शासकीय महाविद्यालय सीधी में लोक माता अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती वर्ष पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.पी.के. सिंह, प्राध्यापक डॉ. अरुणा सिंह, कार्यर्₹ म के संयोजक डॉ. अश्वनी कुमार द्विवेदी, डॉ. सिद्धार्थ कुमार वर्मा, डॉ. गुलशेर अहमद, डॉ. राम सुरेश भारती, डॉ विनोद साकेत, डॉ दिवाकर सिंह, डॉ. निवेदिता लखेरा, डॉ. शशिकला पटेल, डॉ. प्रतिभा सिंह डॉ. विभा कुशवाहा डॉ. कोमल पांडे एवं महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की उपस्थिति में वृहद कार्यर्₹ म का आयोजन किया गया। कार्यर्₹ म का प्रारंभ डॉ विनोद साकेत के उद्बोधन एवं संचालन से प्रारंभ हुआ तत्पश्चात महाविद्यालय के छात्र खेलेश्वर साकेत, अंकुश सिंह परिहार, राज ललन, अनामिका तिवारी, अंजली सिंह, आराधना यादव, सुमन साहू एवं अन्य छात्रों ने देवी अहिल्याबाई के जीवन पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्र में किए गए लोक कल्याणकारी एवं महत्वपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डाला। डॉ अश्वनी कुमार द्विवेदी ने अपने व्याख्यान में लोकमाता अहिल्याबाई के व्यक्तित्व कृतित्व और विपरीत परिस्थितियों में निखरते हुए समाज के लिए त्याग, बलिदान और उनके सेवा भाव को सबके समक्ष प्रस्तुत किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. पी.के. सिंह ने अहिल्याबाई के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा किए गए कार्यों से सभी छात्र-छात्राओं को सीखने का आग्रह किया तथा महिला सशक्तिकरण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर व्याख्यान दिया। कार्यर्₹ म के अंत में डॉ. गुलशेर अहमद ने आभार व्यक्त किया।

जिला चिकित्सालय हितग्राहियों की सेवा के लिए तत्पर

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक डॉ दीपरानी ईसरानी ने कहा कि जिला चिकित्सालय सीधी हितग्राहियों की सेवा के लिए तत्पर है। उन्होंने अपील की है कि भ्रामक जानकारी जनमानस में प्रेषित न की जाये तथा लोगों का विश्वास संस्था में बनाये रखें। सिविल सर्जन ने कतिपय समाचार एजेंसियों द्वारा गत दिवस की घटना के संबंध में प्रकाशित खबर के संबंध में वास्तविक जानकारी देकर बताया कि घटना बहरी थाना अंतर्गत ग्राम नेबूहा की है जहाँ बल्कर से तीन बाइक सवारों की दुर्घटना हुई थी, जिसमें जिला चिकित्सालय सीधी में हादसे से पीड़ित दो व्यक्तियों की मृत्यु अस्पताल पहुचने के पूर्व हो गई थी और घटना में पीड़ित व्यक्ति मुकेश यादव पिता देवरत यादव को जिला अस्पताल सीधी में रात्रि 10.35 बजे गंभीर हालत में लाया गया, जिनको आपातकालीन ड्यूटी डाक्टर एवं डॉ. हरिओम सिंह शल्य रि या विशेषज्ञ के द्वारा उपचार किया गया परन्तु हालत में सुधार नहीं होने एवं अत्याधिक रक्तस्रव होने के कारण दिनांक 06.10.2024 को रात्रि 1.20 बजे मृत्यु हो गई थी। उन्होने बताया कि जिला चिकित्सालय सीधी में मृतक व्यक्तियों का दिनांक 06.10.2024 को सुबह 08 बजे पोस्टमार्टम कराया गया एवं पोस्टमार्टम उपरान्त जिला प्रशासन सीधी द्वारा शव वाहन के माध्यम से मृतक के शवों को सम्मान सहित उनके गृह ग्राम तक भिजवाया गया था। उन्होंने कहा कि जिला चिकित्सालय में पदस्थ स्टॉफपूरी संवेदना के साथ मरीजों का इलाज करने का प्रयास कर रहा है तथा यह प्रयास है कि सभी हितग्राहियों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सके।

असफ्ल चालानों के विरूद्ध देयक तत्काल प्रस्तुत कर भुगतान के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने समस्त विभाग प्रमुखों को निर्देशित किया है कि असफ्ल ई भुगतान की सूची कोषालय द्वारा उपलब्ध कराई गई है। विशेष प्राथमिकता देते हुए असफ्ल चालानों के विरूद्ध देयक कोषालय में तत्काल प्रस्तुत कर भुगतान की कार्यवाही दिनांक 18.10.2024 तक अनिवार्य रूप से पूर्ण करें। साथ ही यदि सूची में उल्लेखित चालानों का भुगतान किया जा चुका है तो इस संबंध में प्रमाण पत्र प्रस्तुत करें अन्यथा संबंधी आहरण संवितरण अधिकारी एवं संबंधित लिपिक का माह अक्टूबर 2024 का वेतन भुगतान नहीं किया जावेगा।

जवाहर नवोदय विद्यालय चुरहट में कक्षा 9वी तथा 11वीं में प्रवेश की प्रक्रिया प्रारंभ

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। प्रभारी प्राचार्य जवाहर नवोदय विद्यालय चुरहट ने जानकारी देकर बताया है कि कक्षा 9वीं एवं 11वीं में सत्र 2025-26 में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन विद्यालय की वेबसाइट पर प्रारंभ हो गया है। ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 30.10.2024 है। अभ्यर्थी का जन्म कक्षा 9वीं के लिए दिनांक 01.05.2010 से 31.07.2012 एवं कक्षा 11वीं के अभ्यर्थी का जन्म दिनांक 01.06.2008 से 31.07.2010 के बीच होना चाहिए, अभ्यर्थी सीधी जिले का निवासी होना चाहिए एवं सीधी जिले में ही कक्षा 9वीं के लिए 8वीं में एवं कक्षा 11वीं के लिए 10वीं में अध्ययनरत होना चाहिए। पात्रता पूर्ण करने वाले अधिक से अधिक अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन करें। परीक्षा 08 फ्ऱवरी 2025 होगी।

भूतपूर्व सैनिकों के लिए युद्ध सम्मान योजना अंतर्गत आवेदन आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला सैनिक कल्याण अधिकारी ने जानकारी देकर बताया है कि युद्ध सम्मान योजना के अंतर्गत भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग भारत सरकार द्वारा 15 लाख रूपये सम्मान निधि के रूप में दिये जाने का प्रस्ताव है। सभी भूतपूर्व सैनिक (या उनकी प%ी), अफ्सर/जेसीओ/जवान जिन्होंने 1965 या 1971 युद्ध में भाग लिया एवं उन्हे समर सेवा स्टार या पूर्वी स्टार/पश्चमी स्टार मेडल प्राप्त किये है, उनका डाटा एकत्र किया जा रहा है। सीधी एवं सिंगरौली जिले में भूतपूर्व सैनिक जो कि मेडल प्राप्त किये हैं, अपना पूरा व्यौरा आवेदन डिसचार्ज बुक और सभी सपोर्टिंग डाक्यूमेंट के फोटो कापी के साथ निर्धारित प्रारूप में जिला सैनिक कल्याण कार्यालय सीधी में 15 अक्टूबर 2024 तक जमा कर सकते है। अधिक जानकारी के लिए जिला सैनिक कल्याण कार्यालय सीधी से संपर्क कर सकते हैं।

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर स्वास्थ्य शिविर आज

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। अक्टूबर माह को मानसिक स्वास्थ्य माह तथा 10 अक्टूबर को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया जाता है। उक्त के अनुक्रम में 10 अक्टूबर 2024 को सुबह 09 बजे से दोपहर 2 बजे तक जिला चिकित्सालय सीधी के ओपीडी कक्ष ₹ मांक 11 में एक दिवसीय स्वास्थ्य शिविर एवं जन-जागरूकता हेतु गतिविधियों का आयोजन किया जायेगा। सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक डॉ. दीपारानी इसरानी द्वारा आदेश जारी कर डॉ. रविशंकर पटेल चिकित्सा अधिकारी मानसिक रोग, अमिता द्विवेदी नर्सिंग ऑफ्सिर एवं शुभम शुक्ला नर्सिंग ऑफ्सिर की ड्यूटी एक दिवसीय स्वास्थ्य शिविर एवं जन-जागरूकता गतिविधियों हेतु लगाई गई है।

सिंगरौली में निकली 551 मीटर लंबी चुनरी यात्रा, हजारों भक्त हुए शामिल

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। नवरात्रि के अवसर पर बुधवार शाम 4 बजे सिंगरौली जिले के बैढ़न जिला मुख्यालय में 551 मीटर लंबी चुनर यात्रा निकाली गई। जिसमें 1 हजार से ज्यादा भक्तों ने हिस्सा लिया। आयोजकों का कहना है कि निरंतर 5 साल से यह चुनर यात्रा निकाली जा रही है।

बैढ़न के काली मंदिर से यह चुनर यात्रा आरंभ होती है और वापस जाकर वहीं पर समाप्त होती है। इस दौरान चुनर यात्रा काली मंदिर, मस्जिद चौक और अंबेडकर चौराहे की तरफ होते हुए बाद आगे बढ़ती है। इस यात्रा में हजारों लोग कई किलोमीटर तक नंगे पैर चलते हैं।

आयोजक मिथलेश मिश्रा का कहना है कि इस यात्रा में हर साल शामिल होने वाले भक्तों की संख्या बढ़ रही है। हर वर्ष की तरह नवरात्रि के 6वें दिन यह चुनर यात्रा निकाली जाती है।

विचार

सड़क पर चलने के तरीकों से अनजान तो फिर कैसे रुकेंगे हादसे

दरअसल हम जब सड़क पर चलने के कानून कायदों से ही अनजान है या आधी अधूरी जानकारी है तो फिर सड़क हादसों में कमी लाने की बात अपने आप में बेमानी हो जाती है। एक और तो सड़क पर यातायात का दबाव बढ़ता जा रहा है तो दूसरी और नियमों की धज्जियां उड़ना आम है। यही कारण है कि साल दर साल सड़क हादसों में जिंदगी गंवाने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। एक सर्वे के अनुसार दिल्ली के ही अधिकांश लोगों को सड़क सुरक्षा मानकों की जानकारी नहीं होती। यहां तक कि एक तरफ से दूसरी और सड़क क्रोस करने वाले अधिकांश लोग जहां ओवरब्रिज या अण्डरपास बना हुआ है उस तक से वाकिफ नहीं है। जेबरा क्रास के उपयोग की बात तो इसलिए कोई मतलब नहीं रखती की उस पर तो दो पहिया, चौ पहिया वाहन रेड लाइट पर अपने वाहन को रोकने में कोई परहेज ही नहीं बरतते। यही कारण है कि क्या पैदल चलने वाले और क्या वाहन चालक सड़क हादसों के आसानी से षिकर हो रहे हैं। बात थोड़ी समझ में कम आने वाली है पर इसे सिरे से खारिज भी नहीं किया जा सकता कि देश की राजधानी दिल्ली में निवास करने वाले 90 प्रतिशत लोगों को सड़क सुरक्षा मानकों की पूरी तरह से जानकारी नही है। साल दर साल सड़क हादसों और सड़क हादसों के कारण हताहत व मौत के मुहं में समाने वालों के आंकड़े कम होने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। कम्युनिटी अगेंस्ट ड्रंकन ड्राइविंग (कैड) द्वारा अगस्त, 2023 से 31 दिसबंर 2023 तक दिल्ली में कराये गये सर्वे की रिपोर्ट तो यही कह रही है। थोड़ी देर के लिए सर्वे रिपोर्ट को भी अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा कर बताई हुई मान लें तब भी सड़क दुर्घटना के आंकड़ों से तो मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। एक बात और साफ हो जाती है कि जब देश की राजधानी दिल्ली के यह हाल है तो फिर गांव कस्बावासियों में सड़क सुरक्षा कायदों का पूरा ज्ञान होने की अपेक्षा करना पूरी तरह से बेमानी होगी। कैड के संस्थापक प्रिस सिंघल की माने तो सड़क हादसों का सबसे बड़ा कारण लोगों को सड़क सुरक्षा मानकों की जानकारी नहीं होना है। सरकार द्वारा भले ही लाख दावें किये जाते हों कि वाहनों के चलाने के लिए जारी होने वाले ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने से पहले परीक्षा लेकर जांच परख कर ही लाइसेंस जारी होते हैं पर हकीकत कुछ और ही सामने आती है। कैड के दिल्ली के सर्वे में ही यह सामने आया है। सही मायने में लोगों को अधिकांश जानकारी वयां करती है। यही कारण है कि नियमों की पालना के प्रति जो गंभीरता होनी चाहिए वह दिखाई ही नहीं देती। दिल्ली में ही 93 फीसदी लोगों को पता ही नहीं है कि ब्लेक स्पॉट कहां कहां है? सड़क पर चलने वाले 67 फीसदी लोग अपने आपको असुरक्षित महसूस करते हैं। कहा तो यहां तक जाता है कि अधिकांश लोगों को दलालों के माध्यम से घर बैठे ड्राइविंग लाइसेंस मिल जाते हैं। ऐसे में सड़क हादसों में कमी की बात करना दिन में सपने देखने की तरह ही है।

हरियाणा में भाजपा की जीत से ज्यादा कांग्रेस की हार और तीसरे-चौथे मोर्चे के जार-जार होने की छिड़ी हुई है चर्चा

कमलेश पांडे

हरियाणा में मिली अप्रत्याशित बीजेपी के लिए आने वाले चुनावों के लिहाज से भी एक शुभ संकेत जैसा ही है, जिसकी शुरुआत महाराष्ट्र व झारखंड के विधानसभा चुनाव से होगी। फिर दिल्ली भी इससे प्रभावित होगी, योंकि उसके चारों ओर कमल खिला हुआ है। हरियाणा की चुनावी परीक्षा में बीजेपी जहां 48 सीटें जीतकर पास हो गई, वहीं कांग्रेस को उमीदों से कम सीटें महज 37 मिलीं। वहीं, इंडियन नेशनल लोक दल को मात्र 2 सीटें मिलीं, जबकि 3 सीटें निर्दलीय प्रत्याशी जीत ले गए।सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि सूबे में साधारी पार्टियों के बी टीम के रूप में काम कर रहीं आम आदमी पार्टी, जननायक जनता पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, आजाद समाज पार्टी आदि को बेहद खराब अंक मिले।

हां, इन्होंने राज्य में कांग्रेस के बढ़ते ग्राफ को थामने में भाजपा की अंदरखाने से मदद की, ताकि भविष्य में कोई भी मजबूत विपक्षी दल उन्हें नजरअंदाज नहीं कर सके। इस अप्रत्याशित चुनाव परिणाम से जहां भाजपा की बांछें खिल गईं, वहीं कांग्रेस के सियासी हौसले लगातार तीसरी बार पस्त पड़ गए। इस बार तो वह जीती हुई बाजी हार गई। इससे यह साबित हो गया कि अब वह पूरी तरह से परजीवी पार्टी बन गई है। क्योंकि हरियाणा में भी अकेले थी तो हार गई। यही वजह है कि हरियाणा में भाजपा की जीत से ज्यादा कांग्रेस की हार और तीसरे-चौथे मोर्चे के जार-जार होने की चर्चा हर ओर छिड़ी हुई है।

देखा जाए तो हरियाणा में कांग्रेस को शिकस्त देकर भाजपा ने एक बार फिर से यह साबित कर दिया कि चुनावी रणनीति बनाने में उसके रणनीतिकारों की कोई तोड़ नहीं। हां, इतना जरूर है कि जब कभी भी और जहां कहीं भी वह हारती है तो अपनों की भीतरघात की वजह से और जहां कहीं भी ताल ठोंक कर जीतती है तो आरएसएस के वरदहस्त और अपने कार्यकर्ताओं के अतिउत्साह के चलते, जो हिंदुत्व और राष्ट्रवाद के प्रति पूरी तरह से समर्पित रहते हैं। और अब जिस तरह से प्रधानमंत्री पीएम नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस को अंतरराष्ट्रीय साजिश का हिस्सा करार दिया है, वह भी उसपर भारी पड़ने वाला है। जिस तरह से भारत के लोकतंत्र, अर्थतंत्र और सामाजिक तानेबाने को कमजोर करने की अंतर्राष्ट्रीय साजिशें हो रही हैं, उसके मुताल्लिक पीएम मोदी की बातों में दम है। नि:सन्देह कांग्रेस उसी मुस्लिम लीग की ट्रू कॉपी बनती जा रही है, जिसके प्रतिरोध स्वरूप उसने राष्ट्र विभाजन तक को स्वीकार किया था।

सच कहूं तो हरियाणा के मामले में चुनावी पंडित जिस तरह से गच्चा खा गए, उससे फिर यह बात स्पष्ट हो गई कि राजनीति में दो जोड़ दो बराबर चार समझने की भूल कभी नहीं करनी चाहिए और जो ऐसा करते हैं, सियासत के हाशिये पर चले जाते हैं हुड्डा-शैलजा सरीखे अन्य क्षेत्रीय नेताओं की तरह! जानकारों के मुताबिक, हरियाणा में हैट्रिक लगाते हुए भाजपा वहां तीसरी बार अपनी सरकार बनाएगी। आम चुनाव 2024 में कांग्रेस गठबंधन को मिली तात्कालिक अप्रत्याशित सफलता की बात यदि छोड़ भी दी जाए तो हाल के वर्षों में मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, असम, गुजरात आदि के बाद हरियाणा भी एक ऐसा राज्य बन चुका है, जहां पर बीजेपी ने अपने मजबूत चुनावी प्रबंधन से विरोधी पार्टियों के मंसूबे ध्वस्त कर दिए। वहीं, बिहार, पश्चिम बंगाल, जम्मूकश्मीर जैसे राज्यों में भी उसकी स्थिति सुधरी है।

हरियाणा में जबरदस्त एंटी इनकंबेंसी के बावजूद बीजेपी का तीसरा बार जीतना बहुत मायने रखता है। क्योंकि उसकी जीत अब इस बात को स्पष्ट करती है कि एससी-ओबीसी मतदाताओं को खींचने में कामयाब रही। भले ही चुनाव नतीजों से पहले एग्जिट पोल में कांग्रेस की जीत की भविष्यवाणी की गई थी और यहां तक कहा गया था कि किसान, जवान और पहलवान बीजेपी से नाराज हैं। इसलिए उससे सत्ता छिन जाएगी, लेकिन मुख्यमंत्री सैनी के आत्मविश्वास के चलते जो असल नतीजे आए, उससे कहानी बिल्कुल पलट गई है। गीता की धरती पर सत्य की जीत हुई। कुरुक्षेत्र वाले भूभाग में कौरवों सरीखी कांग्रेस हार गई।

बीजेपी ने गत लोकसभा चुनाव से सबक लेते हुए गैर जाट मतदाताओं को गोलबंद करने का काम किया और अपनी रणनीति में वह कामयाब हो गई। खासकर एससी और ओबीसी समुदाय से आने वाले मतदाताओं पर उसने फोकस किया और उनको अपनी तरफ खींचने में कामयाब रही। वहीं, चुनाव से ठीक पहले बीजेपी की सीएम बदलने वाली रणनीति भी गुजरात की तरह ही कामयाब रही। क्योंकि नायब सिंह सैनी, ओबीसी समुदाय से आते हैं, जिनको सीएम बनाने से ओबीसी मतदाताओं के बीच एक सकारात्मक संदेश गया। वहीं, ओबीसी रणनीतिकार दिलीप मंडल को मलाईदार पद देने के बाद उनके समर्थकों ने भी कमल खिलाने का काम किया।

भले ही हरियाणा में जाट मतदाताओं का वोट बैंक बहुत बड़ा है जिनके समर्थन पर कांग्रेस काफी निर्भर रही है, लेकिन उनमें भी दरार डालने में भाजपा सफल रही। जाट मतदाता कितने शक्तिशाली हैं, इसका अंदाजा इस बात से मिलता है कि राज्य में जाट समुदाय से आने वाले मुख्यमंत्री लगभग 33 साल तक शासन कर चुके हैं। हालांकि, वर्ष 2014 में, जब बीजेपी सत्ता में आई तो कांग्रेस के भूपिंदर सिंह हुड्डा को जाना पड़ा, जो जाट समाज से ही आते हैं। क्योंकि बीजेपी ने तब मनोहर लाल खट्टर को सीएम बनाया जो एक पंजाबी खत्री समुदाय से सम्बन्धित हैं। जब 2019 में बीजेपी अपने दम पर बहुमत हासिल नहीं कर पाई, तो उसने जेजेपी नेता दुष्यंत चौटाला का समर्थन लिया था, जो एक महत्वपूर्ण जाट नेता हैं।

बीजेपी के लिए यह जीत इस मायने में भी महत्वपूर्ण है कि उसके खिलाफ यहां तगड़ी एंटी इनकंबेंसी लहर थी। जिससे पार्टी भी वाकिफ थी। इसलिये अंतिम समय में पार्टी ने नेतृत्व परिवर्तन किया और मनोहर लाल खट्टर की जगह नायब सिंह सैनी को मुख्यमंत्री बनाया। वहीं, राज्य बीजेपी अध्यक्ष मोहन लाल बडोली और पूर्व सांसद संजय भाटिया जैसे वरिष्ठ नेताओं तक को विधानसभा चुनावों से दूर रखने का फैसला उनकी रजामंदी से किया। क्योंकि गत लोकसभा चुनावों में पार्टी का प्रदर्शन बेहद खराब रहा था। 2024 के आम चुनावों में, बीजेपी ने 10 में से सिर्फ 5 लोकसभा सीटें जीतीं और महज 46.1 प्रतिशत वोट हासिल किए, जबकि कांग्रेस ने बाकी सीटें छीन लीं और 43.7 प्रतिशत वोट प्राप्त किए। जबकि 2019 के लोकसभा चुनावों में बीजेपी का वोट शेयर 58 प्रतिशत था, जो अब 12 प्रतिशत घटकर 46.1 प्रतिशत रह गया। हालांकि विधानसभा चुनाव के आंकड़े अब बिलकुल अलग तस्वीर पेश करते हैं, जिससे भाजपा को भी सुकून मिली है।

हरियाणा में मिली अप्रत्याशित बीजेपी के लिए आने वाले चुनावों के लिहाज से भी एक शुभ संकेत जैसा ही है, जिसकी शुरुआत महाराष्ट्र व झारखंड के विधानसभा चुनाव से होगी। फिर दिल्ली भी इससे प्रभावित होगी, क्योंकि उसके चारों ओर कमल खिला हुआ है। इस प्रकार हरियाणा ने बीजेपी को 2024 लोकसभा चुनावों के दौरान देखी गई अप्रत्याशित गिरावट को उलटने का पहला वास्तविक मौका दिया है। क्योंकि यहां की जीत से महाराष्ट्र, झारखंड और अंतत: दिल्ली में भी बेहतर प्रदर्शन की नींव रखी जा सकती है। बशर्ते कि यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के पर कतरने वाली सियासत को वह अंदरूनी तौर पर बढ़ावा नहीं दे। क्योंकि हरियाणा में भी सर्वाधिक मांग योगी की ही थी चुनाव प्रचार के दौरान। उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र में इस वर्ष के आखिर तक चुनाव होने वाले हैं। वहीं, झारखंड में भी जल्द ही चुनाव होंगे। संभव है कि दिल्ली का चुनाव भी इन राज्यों के साथ हो जाए। अगले वर्ष बिहार में भी चुनाव होंगे। इसलिए हरियाणा में जीत से बीजेपी को एक तरीके से आगामी चुनावों में जो नैतिक बढ़त हासिल होगी, वही उसकी वास्तविक पूंजी है।

स्वर्ण ऋण के प्रति बढ़ता भारतीयों का रुझान

प्रह्लाद सबनानी

भारत में सामान्यजन के पास स्वर्ण के रूप प्रतिभूति उपलब्ध रहती है अत: स्वर्ण ऋण बहुत अधिक चलन में आ रहा है। विशेष रूप से गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों द्वारा ऋण की प्रतिभूति के विरुद्ध स्वर्ण ऋण आसानी से उपलब्ध कराया जा रहा है।

किसी भी देश के आर्थिक विकास को गति देने हेतु पूंजी की आवश्यकता रहती है। तेज आर्थिक विकास के चलते यदि किसी देश में वित्तीय बचत की दर कम हो तो उसकी पूर्ति ऋण में बढ़ोत्तरी से की जा सकती है। भारत में ऋण सकल घरेलू अनुपात अन्य विकसित एवं कुछ विकासशील देशों की तुलना में अभी बहुत कम है। परंतु, हाल ही के समय में भारत का सामान्य नागरिक ऋण के महत्व को समझने लगा है एवं भौतिक संपति के निर्माण में अपनी बचत के साथ साथ ऋण का भी अधिक उपयोग करने लगा है। कुछ बैंक सामान्यजन को ऋण प्रदान करने हेतु प्रतिभूति की मांग करते है। भारत में सामान्यजन के पास स्वर्ण के रूप प्रतिभूति उपलब्ध रहती है अत: स्वर्ण ऋण बहुत अधिक चलन में आ रहा है। विशेष रूप से गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों द्वारा ऋण की प्रतिभूति के विरुद्ध स्वर्ण ऋण आसानी से उपलब्ध कराया जा रहा है। भारत में तेजी से बढ़ रहे स्वर्ण ऋण के कारणों एवं कारकों का वर्णन इस लेख में किया गया है। भारत में वित्तीय वर्ष 2022-23 की प्रथम तिमाही में विभिन्न गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों द्वारा 39,687 करोड़ रुपए के स्वर्ण ऋण स्वीकृत किए गए थे, स्वीकृत की जाने वाली यह राशि वित्तीय वर्ष 2023-24 की प्रथम तिमाही में बढ़कर 62,835 करोड़ रुपए हो गई एवं वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में और आगे बढ़कर 79,218 करोड़ रुपए हो गई। गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में स्वर्ण ऋण के मामले में 26 प्रतिशत की आकर्षक वृद्धि दर हासिल की है जबकि अन्य प्रकार के ऋणों में इसी अवधि के दौरान औसत वृद्धि दर 12 प्रतिशत की रही है। भारतीय नागरिक स्वर्ण ऋण के प्रति बहुत अधिक आकर्षित हो रहे हैं। आज भारत के विभिन्न गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों एवं विभिन्न बैंकों द्वारा भारी मात्रा में स्वर्ण ऋण स्वीकृत किए जा रहे हैं। अगस्त 2024 माह में बैंकों एवं गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों ने मिलकर 41 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल करते हुए 1.4 लाख करोड़ रुपए के स्वर्ण ऋण स्वीकृत किए हैं। आज गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के कुल ऋण में स्वर्ण ऋण का प्रतिशत में हिस्सा सबसे अधिक है, दूसरे स्थान पर स्कूटर एवं चार पहिया वाहनों के लिए प्रदान किए गए ऋणों का ऋण हैं, इसके बाद तीसरे स्थान पर व्यक्तिगत ऋण 14 प्रतिशत के भाग के साथ है एवं इसके बाद जाकर गृह ऋण का नम्बर आता है जो कुल ऋण का 10 प्रतिशत भाग है। बैंकों एवं गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों द्वारा

प्रदान किए जाने वाले स्वर्ण ऋण पर पूंजी पर्याप्तता सम्बंधी शिथिल नियमों का पालन करना होता है। अन्य प्रकार के ऋणों की तुलना में स्वर्ण ऋण पर जोखिम का भार (रिस्क वेट) तुलनात्मक रूप से कम रहता है। इससे बैंक एवं गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियां भी स्वर्ण ऋण प्रदान करने की ओर आकर्षित होते हैं।

इसे भी पढ़ें: विश्व के वित्तीय एवं निवेश संस्थान भारत के आर्थिक विकास के अनुमानों को बढ़ा रहे हैं

यहां स्वाभाविक रूप से प्रश्न उभरता है कि पिछले लगभग 3 वर्षों के दौरान भारत के नागरिकों में स्वर्ण ऋण के प्रति इतना रुझान क्यों बढ़ा है? भारतीय रिजर्व बैंक के पास स्वर्ण के भंडार बढ़कर 822 मेट्रिक टन से भी अधिक हो गए हैं परंतु विश्व स्वर्ण काउन्सिल के एक अनुमान के अनुसार, भारतीय नागरिकों के पास स्वर्ण के भंडार बढ़कर 25000 टन से भी अधिक के हो गए हैं, जिनकी बाजार कीमत वर्ष 2020 में 109 लाख करोड़ रुपए की थी। भारत में नागरिकों के पास स्वर्ण भंडार विश्व के कुल स्वर्ण भंडार का 11 प्रतिशत है। भारत में प्रतिवर्ष 750 से 800 टन स्वर्ण का आयात होता है और पिछले 25 वर्षों के दौरान भारत में 17,500 टन स्वर्ण का आयात हुआ है और मार्च 2019 से मार्च 2024 के दौरान भारत में स्वर्ण भंडार 40 प्रतिशत से बढ़ गए हैं। दरअसल, भारत में दीपावली (धन तेरस) के शुभ अवसर पर स्वर्ण की खरीद को शुभ माना जाता है एवं मध्यमवर्गीय परिवार भी धन तेरस के दिन स्वर्ण की खरीद प्रति वर्ष करते हैं। इससे भारत के करोड़ों परिवारों के पास स्वर्ण का स्टॉक उपलब्ध रहता है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों द्वारा स्वर्ण ऋण प्रदान करने के सम्बंध में नियमों को बहुत सरल बनाया है एवं अब भारतीय नागरिकों को स्वर्ण के स्टॉक के विरुद्ध ऋण बहुत ही आसान शर्तों पर उपलब्ध होने लगा है। भारत में प्रचिलित परम्पराओं के अनुसार मध्यमवर्गीय परिवारों द्वारा स्वर्ण को बेचना शुभ नहीं माना जाता है जबकि स्वर्ण की खरीद को शुभ माना जाता है। अत: स्वर्ण को बाजार में बेचने के स्थान पर स्वर्ण को बैंक में गिरवी रखकर उसके विरुद्ध बैंक से आसानी से स्वर्ण ऋण प्राप्त करना ज्यादा उचित माना जाता है।

और फिर, हाल ही के वर्षों में भारतीय शेयर बाजार बहुत ही तेज गति से आगे बढ़ रहा है और विभिन्न कम्पनियों के शेयरों में किए गए निवेश पर 12 प्रतिशत से 20 प्रतिशत तक की आय प्रतिवर्ष होने लगी है। इससे बहुत बड़ी मात्रा में भारतीय नागरिक (खुदरा निवेशक) शेयर बाजार में निवेश करने हेतु आकर्षित हुए हैं। चूंकि स्वर्ण ऋण बहुत ही आसानी से उपलब्ध होने लगे हैं अत: मध्यमवर्गीय परिवार स्वर्ण ऋण लेकर पूंजी बाजार में निवेश अथवा चार पहिया वाहन खरीदने एवं गृहों का निर्माण करने लगे हैं। स्वर्ण ऋण की राशि आसान किश्तों में जमा करानी होती है, अत: स्वर्ण लेने वाले नागरिकों पर कोई बहुत अधिक दबाव भी नहीं पड़ता है। उक्त कारणों के चलते भारत में हाल ही वर्षों में स्वर्ण ऋण प्राप्त करने वाले नागरिकों में अतुलनीय वृद्धि दर्ज हुई है।

दुर्गा पंडालों में ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' योजना के तहत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

कन्या भ्रूण हत्या रोकथाम और कन्या शिक्षा को बढ़ावा देने पर जोर

मीडिया ऑडीटर, चिरमिरी (एजेंसी)। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा शहर के विभिन्न दुर्गा पंडालों में नवरात्रि के पावन अवसर पर "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" योजना के अंतर्गत विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम और कन्या शिक्षा के महत्व पर जोर दिया जा रहा है। कार्यक्रमों में स्थानीय लोगों को जागरूक करने के लिए प्रेरणादायक स्लोगन और जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ-आने वाली पीढ़ी को सशक्त बनाओ" जैसे प्रभावशाली संदेश के साथ लोगों को यह बताया जा रहा है कि बेटियां समाज और देश का भविष्य हैं और उनके जीवन और शिक्षा की सुरक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है। इस अभियान के अंतर्गत खासतौर पर कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ कठोर संदेश दिए जा रहे हैं, जैसे-"कन्या भ्रूण हत्या बंद करो, बेटी को जीवन का हक दो"। साथ ही बेटियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अपील की जा रही है, ताकि देश को एक सशक्त भविष्य मिल सके। कार्यक्रम आयोजकों का कहना है कि नवरात्रि के इस पावन पर्व पर देवी दुर्गा की पूजा के साथ ही समाज में बेटियों के प्रति सम्मान और सुरक्षा का भाव जगाना आवश्यक है।

बॉयफ्रेंड संग पकड़ी गई तो पति को मार डाला

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद में एक महिला ने प्रेमी के साथ मिलकर अपने पति की हत्या कर दी। पति को लाठी-डंडे से पीट-पीटकर मार डाला। फिर उसकी लाश को बाड़ी में दफना दी। पकड़े जाने के डर से शव को निकाला और हाईवे किनारे गाड़ आए। मामला शोभा थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, ढोल सराई गांव निवासी रोहित मरकाम (33) की शादी करीब साल भर पहले पेंड्रा निवासी समारी बाई से हुई थी। समारी घर की इकलौती बेटी है। उसके पिता नहीं थे, इसके कारण रोहित सास की देखभाल करने के लिए अपने ससुराल में घर जमाई बनकर रहता था। इसी बीच अगस्त महीने में नवाखाई में जब रोहित घर नहीं पंहुचा तो पिता पुनीत राम उसके ससुराल पहुंच गए। वहां उन्होंने बेटे के बारे में बहू से पूछा तो उसने बताया कि रोहित कमाने की बात कहकर करीब एक माह पहले आंध्र प्रदेश गया था, लेकिन अभी तक नहीं लौटा है।

बहू की बात सुनकर रोहित के पिता को यकीन नहीं हुआ। जब काफी कोशिशों के बाद बेटे का पता नहीं चला तो उन्होंने गांव वालों से रायशुमारी कर 2 दिन पहले थाने में गुमशुदगी दर्ज करा दी। पुलिस ने रोहित की जांच शुरू की और पत्नी समारी और आसपास के लोगों से पूछताछ की।

पुलिस का कहना है कि पहले तो समारी बाई गोलमोल जवाब देती रही। संदेह होने पर पुलिस ने सख्ती से पूछा तो समारी बाई ने बताया कि, उसका ध्रुवागुड़ी निवासी प्रकाश कश्यप से प्रेम संबंध है। रोहित ने दोनों को आपत्तिजनक हालत में देख लिया था। इसके बाद वह हमारे प्यार में रोड़ा बन रहा था।

इसके बाद समारी बाई ने प्रकाश के साथ मिलकर रोहित को मारने की साजिश रची। दोनों ने मिलकर 15 जुलाई को रोहित की हत्या कर दी। रोहित के सिर, चेहरे और शरीर के कई जगहों पर चोट के निशान मिले हैं। हत्या के बाद दोनों ने शव को पहले पेंड्रा गांव में ही बाड़ी में दफना दिया। समारी बाई ने पुलिस को बताया कि रोहित के पिता लगातार पूछताछ करने लगे थे, जिससे वह घबरा गई। पकड़े जाने की डर से प्रेमी के साथ मिलकर उसने बाड़ी से शव बाहर निकाला और 20 किमी दूर नेशनल हाईवे किनारे दफना आए। इस दौरान कुछ बॉडी पार्ट्स वहीं छूट गए थे।

नेशनल हाईवे किनारे शव टुकड़ों में मिला: पुलिस ने बताया कि रोहित की पत्नी संदिग्ध थी। पूछताछ में बताए गई जगह पर गए, वहां से बॉडी के कुछ पार्ट्स बरामद हुए हैं। वहीं दूसरी जगह नेशनल हाईवे किनारे से आधा शव मिला है। बाकी शव बुरी तरह से सड़ चुका था। पुलिस ने शव के टुकड़ों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

अक्षय कुमार के फिल्ममेकर का महादेव सट्टा कनेक्शन, महेश मांजरेकर जैसे कलाकार साइन

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। हादेव सट्टा ऐप केस में ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) ने एक और बड़ा खुलासा किया है। ईडी की ओर से पेश पूरक चालान में ऐप के जरिए कमाए गए पैसों का इस्तेमाल बॉलीवुड में किए जाने का जिक्र है। कुरैशी प्रोडक्शन हाउस के जरिए पैसे लगाए गए हैं। प्रोड्यूसर वसीम कुरैशी अक्षय कुमार और संजय मांजरेकर के साथ एक फिल्म भी बना रहा था, जिसे फंड की कमी के चलते बीच में छोड़ना पड़ा है।

वसीम कुरैशी दुबई की एक इवेंट मैनेजमेंट फर्म भी चलाता है। फर्म ने फरवरी 2023 में सौरभ चंद्राकर की शादी में परफॉर्म करने बॉलीवुड के कई एक्टर्स को बुलाया था। अक्टूबर 2023 में श्रष्ठ ने कुरैशी प्रोडक्शन पर छापा मारा था जहां कई संदिग्ध बैंकिंग लेनदेन, एग्रीमेंट, प्रॉपर्टी के पेपर और हार्ड ड्राइव जब्त की गई थी।

इस प्रोडक्शन हाउस ने बनाई कई फिल्में: कुरैशी प्रोडक्शन के बैनर तले अक्षय कुमार स्टारर सात फिल्में बनाई जा रही हैं। इनमें एक इंडियन-मराठी पीरियड ड्रामा फिल्म है, जिसके महेश मांजरेकर डायरेक्टर हैं। इस फिल्म को पहले बीते साल दिवाली पर रिलीज किया जाना था लेकिन इसकी रिलीज टाल दी गई थी। अब यह फिल्म विवादों और जांच के घेरे में भी आ गई है।

सौरभ चंद्राकर के भाई ने लगाया फिल्म में पैसा: ईडी की ओर से पेश किए गए पूरक चालान के मुताबिक, कुरैशी प्रोडक्शन के मालिक वसीम कुरैशी और सौरभ चंद्राकर के भाई गीतेश चंद्राकर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। दोनों ने साथ में कई बॉलीवुड फिल्मों की मेकिंग की और ऑनलाइन सट्टेबाजी से आने वाले कमाई को कुरैशी प्रोडक्शन प्राइवेट लिमिटेड की ओर से फिल्म निर्माण में लगाया।

'देहाती डिस्को' भी गीतेश चंद्राकर ने बनाई: 2022 की मशहूर कोरियोग्राफर गणेश आचार्य अभिनीत फिल्म 'देहाती डिस्को' को वसीम कुरैशी और गीतेश चंद्राकर ने मिलकर बनाया था। इस फिल्म में वसीम के साथ गीतेश चन्द्राकर प्रोड्यूसर थे। वर्तमान में गीतेश चंद्राकर फेयर प्ले और रेड्डी अन्ना जैसे ऑनलाइन बैटिंग ऐप के पैनल्स का संचालन करते हैं।

प्रोडक्शन हाउस की महत्वपूर्ण भूमिका रही: श्रष्ठ की ओर से पेश किए गए अभियोजन पत्र में इस बात का खुलासा हुआ है कि मेसर्स कुरैशी प्रोडक्शन प्राइवेट लिमिटेड महादेव सट्टा के मालिकों की शैल कंपनी के रूप में आगे बढ़ी। ईडी की जांच से पता चला है कि प्रोडक्शन हाउस के निदेशक वसीम कुरैशी, सीईओ करण रमानी, मुस्कान एंटरटेनमेंट की दुबई स्थित इवेंट मैनेजमेंट फर्म ने सौरभ चंद्राकर की शादी में बॉलीवुड हस्तियों को बुलाने में भूमिका निभाई। मुस्कान एंटरटेनमेंट ने चंद्राकर की शादी में सेलिब्रिटी को लाने का मैनेजमैंट देखा और सेलिब्रिटी को लाखों और करोड़ों रुपए का एडवांस पेमेंट भी किया है। इस फर्म ने बॉलीवुड कलाकारों के लिए वीजा लिया और फ्लाइट की बुकिंग की। बॉलीवुड कलाकारों को आलीशान जगहों पर ठहराया गया। सौरभ की शादी में करीब 200 करोड़ रुपए खर्च हुए थे।

ये कलाकार हुए थे शामिल: सौरभ चन्द्राकर की शादी में पुलकित सम्राट, अली असगर, नुसरत भरूचा, कृष्णा अभिषेक, विशाल ददलानी, आतिफ असलम, राहत फतेह अली खान, एली अवराम, भाग्यश्री, भारती सिंह और कीर्ति खरबंदा, सुनील ग्रोवर जैसे कई कलाकारों ने भारी भरकम फीस के बदले में शादी समारोह में परफॉर्मेंस दी थी। श्रष्ठ के वकील सौरभ पांडेय ने कहा कि, सौरभ की शादी में कई सेलिब्रिटी आए थे। कुछ फिल्म प्रोड्यूसर के जरिए ये कलाकार इंगेज हुए थे। हो सकता है कि इन्हें पेमेंट महादेव सट्टा ऐप से हुआ हो। हालांकि अभी यह इन्विस्टेगेशन का विषय है। सॉलिड प्रूफ के बिना कुछ कहना सही नहीं है लेकिन हां, ये बातें हमारी इनवेस्टिगेशन में जरूर आई थी।

आधार एवं आयुष्मान कार्ड हेतु संयुक्त शिविर लगाने के दिये निर्देश

मीडिया ऑडीटर, चिरमिरी (एजेंसी)।कलेक्टर डी.राहुल वेंकट की अध्यक्षता में कलेक्टर कार्यालय सभा कक्ष में समय-सीमा की बैठक आहूत की। उन्होंने समस्त विभागों से एपीसी की संभागीय बैठक में विभिन्न कार्यों की समीक्षा के साथ विभागीय महत्वपूर्ण पत्रों, मुख्य सचिव की वीसी की जानकारी, पिछले शिविर के लंबित मुद्दे, डीएमएफ कार्यों की प्रगति, आगामी बैठक में शामिल होने वाले प्रस्तावों की जानकारी लेते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिये। कलेक्टर ने राजस्व विभाग के समस्त पटवारी, आरआई तथा तहसीलदारों को निर्देशित करते हुये कहा है कि जिले में धान का रकबा कितना बढ़ा है उसकी यथास्थिति जांच कर स्पष्ट प्रतिवेदन मंगायें। उन्होंने कृषि विभाग को जिले में खरीफ फसल के बाद कृषकों रबि फसल के लिए दलहन और तिलहन लगाने के लिए जागरूक करने तथा विभाग के द्वारा इस क्षेत्र में बीज उत्पादन पर जोर देने के निर्देश दिये। पशु पालन विभाग को जिले में कुक्कुट पालन, बकरी पालन, सुकर पालन कार्ययोजना तैयार करने के साथ ही पशुओं का शत-प्रतिशत टिकाकरण करने के निर्देश दिये। इसके साथ ही उन्होंने जिलें आवारा मवेशियों पर रेडियम बेल्ट लगाने के साथ ही मवेशियों के मालिक की जानकारी तैयार करने के निर्देश दिये। उन्होंने जिले में डेयरी उत्दापन को बढ़ाया देने के लिए शहरी क्षेत्र से लगे ग्रामीण क्षेत्रों का चिन्हाकंन कर नेपीयर घास उगाकर पशुओं के लिए हरा चारा उपलब्ध कराये जाने के लिए कार्ययोजना तैयार करने कहा। कलेक्टर ने समस्त विभाग को विभागीय प्रस्ताव बनाकर प्रस्तुत करने कहा जिससे आने वाले बजट में कार्यों को जोड़ा जा सके। कलेक्टर ने विभिन्न विभागों के कार्यालय के लिए भूमि आबंटन की कार्यवाही लंबित है उन्होंने जिला अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वे नियमानुसार भूमि का चिन्हांकन, नक्शा, खसरा तथा चौहदी तैयार कर प्रकरण दर्ज कराये। जिससे विभागों को भूमि आबंटन की कार्यवाही पूर्ण की जा सके। उन्होंने समस्त विभागों को जेम पोर्टल से सामग्री खरीदने हेतु रजिस्ट्रेशन की स्थिति जांच कर यथास्थिति से विभागों को अवगत कराने के निर्देश दिये। उन्होंने डीएमएफ मद से जो आवश्यक कार्य उनके प्रस्ताव प्रस्तुत करने के निर्देश दिये है।

उन्होंने शासकीय सेवा से अधिवार्षिकी आयु पूर्ण कर सेवानिवृत्त, मृत होने वाले अधिकारी, कर्मचारियों के पेंशन, लंबित पेंशन एवं सामान्य भविष्य निधि के प्रकरणों का शासन द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों के अनुसार समय सीमा में निराकृत करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने संविधान के अनुच्छेद 275 (1) अंतर्गत अनुसूचित क्षेत्र में निवासरत अनुसूचित जनजाति समूहों के आर्थिक, शैक्षणिक एवं सामाजिक उन्नयन हेतु हितग्राही मूलक, परिवार मूलक एवं अधोसंरचनात्मक विकास से संबंधित कार्यों के कार्ययोजना हेतु प्रस्ताव तैयार कर भेजने के निर्देश दिये। इस दौरान अपर कलेक्टर अनिल सिदार, संयुक्त कलेक्टर सी.एस. पैकरा, एसडीएम प्रवीण कुमार भगत, लिंगराज सिदार, सर्व तहसीलदार, जनपद सीईओ, सर्व नगर पंचायत सीएमओ सहित जिला अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

4 से 18 अक्टूबर तक उचित मूल्य दुकान संचालन हेतु आवेदन आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। सर्वसाधारण आज जनता को कार्यालय नगर पालिक निगम चिरमिरी जिला-मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर छत्तीसगढ़ क्षेत्रांतर्गत नवीन शासकीय उचित मूल्य दुकानों के संचालन हेतु कार्यालय अनुविभागीय अधिकारी राजस्व चिरमिरी के आदेश द्वारा दिनांक 27 अगस्त 2024 को सूचना प्रकाशित किया गया था उक्त प्रकाशिता सूचना को अपरिहार्य कारणों से निरस्त किया जाता है एवं नवीन वार्ड वार सूची अनुसार शासकीय उचित मूल्य दुकानों के आबंटन हेतु पुनः संशोधित विज्ञप्ति जारी किया जाता है। जो इस प्रकार हैं जिसमें वार्ड का नाम तथा वार्डों में कार्ड की संख्या दी हुई है। अब्दुल हमीद वार्ड क्र.02, 548, गंगाधर तिलक वार्ड क्र. 06, 508, महात्मा गांधी वार्ड क्र. 09, 461, संत रामकृष्ण वार्ड क्र. 15, 442, संत कबीरदास वार्ड क्र. 18, 254, डॉ. अम्बेडकर वार्ड क्र. 22, 222, विवेकानंद वार्ड क्र. 24, 285, संत कालिदास वार्ड क्र. 27, 420, महाराणा प्रताप वार्ड क्र. 29, 560, शास्त्री वार्ड क्र. 31, 379, अहिल्या बाई वार्ड क्र. 34, 484, राजीव गांधी वार्ड क्र. 36, 200, सरोजिनी नायडू वार्ड क्र. 38, 266, भगत सिंह वार्ड क्र. 40, 479 तथा मौलाना आजाद वार्ड क्र. 04 458 वार्ड शामिल है। उक्त वार्डों की सूचना इस कार्यालय को प्राप्त है। इस हेतु महिला स्वयं सहायता समूह से आवेदन पत्र आमंत्रित कर नियमानुसार आबंटन की कार्यवाही किया जाना है। अतः उपरोक्त संबंधितों से 04 अक्टूबर 2024 से 18 अक्टूबर 2024 तक कार्यालयीन समय में पंजीयन प्रमाण पत्र, पासबुक की छायाप्रति एवं अन्य सम्यक दस्तावेज सहित आवेदन पत्र आमंत्रित किया जाता है। निर्धारित तिथि पश्चात प्राप्त आवेदन पत्रों पर विचार नहीं किया जायेगा।

जिला स्तरीय वाटरशेड सेल सह डाटा सेंटर टीम गठित

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ राज्य जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन एजेंसी द्वारा इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय परिसर रायपुर के निर्देशानुसार से मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में वाटरशेड प्रकोष्ठ सह आकड़ा केंद्र का गठन किया गया है। इस केंद्र का मुख्य उद्देश्य जिले में चल रहे वाटरशेड कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन की निगरानी करना है। इस समिति के अध्यक्ष जिला कलेक्टर होंगे। उपाध्यक्ष मुख्य कार्यपालन अधिकारी (जिला पंचायत/परियोजना निदेशक, जिला ग्रामीण विकास अभिकरण) डीआरडीए, परियोजना प्रबंधक के रूप में उप संचालक, कृषि विभाग को नियुक्त किया गया है। समिति में विभिन्न विभागों के अधिकारियों को पदेन सदस्य के रूप में शामिल किया गया हैं, जिनमें वन मंडलाधिकारी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख (कृषि विज्ञान केंद्र), उप संचालक (पशु चिकित्सा सेवायें), सहायक संचालक (उद्यानिकी), सहायक संचालक (समाज कल्याण), कार्यपालन अभियंता (जल संसाधन विभाग), कार्यपालन यंत्री (ग्रामीण यांत्रिकी विभाग), कार्यपालन अभियंता (लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग) के अलावा महात्मा गांधी नरेगा के कार्यान्वयन एजेंसी के प्रतिनिधि और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के जिला क्रियान्वयन इकाई का प्रतिनिधि भी पदेन सदस्य के रूप में सम्मिलित होंगे। इस समिति के संयोजक उप संचालक कृषि, जिला मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर होंगे।

रायपुर में सगे भाइयों की डूबने से मौत, कुछ देर बाद शव मिले

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)।रायपुर में बुधवार को 2 सगे भाइयों की तालाब में डूबने से मौत हो गई। दोनों भाई घर के पीछे स्थित शीतला तालाब में नहाने गए थे। इस दौरान जब किसी ने बच्चों की लाश देखी तो पुलिस को सूचना दी गई। मामला खमतराई थाना क्षेत्र का है। पुलिस ने बताया कि, बसंत विहार गेट नंबर-2 गोंडवारा निवासी रचित दुबे (13) और हर्षित दुबे (11) सगे भाई थे। घटना बुधवार दोपहर करीब साढ़े 12 बजे की है। आशंका है कि, नहाने के दौरान दोनों गहराई में चले गए। पुलिस ने बताया कि, जब बच्चे डूब रहे थे, तब आसपास कोई नहीं था। कुछ देर बाद किसी ने तालाब में एक बच्चे का शव तैरता हुआ देखा। उसने आसपास मौजूद लोगों और पुलिस को सूचना दी। इसके बाद वहां पर मौजूद लोगों ने दोनों बच्चों की लाश को पानी से बाहर निकाली। इस बीच बच्चों के परिजन भी जानकारी मिलने पर घटना स्थल पर पहुंच गए। फिलहाल घटना को लेकर ज्यादा जानकारी अभी सामने नहीं आ सकी है। बताया जा रहा है कि, रचित और हर्षित का एक छोटा भाई भी है। रचित तीसरी कक्षा में पढ़ता था। पुलिस ने दोनों बच्चों की लाश को पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवा दी है। हादसे के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस का कहना है कि अभी परिजन बात करने की स्थिति में नहीं हैं। ऐसे में ज्यादा जानकारी हादसे को लेकर नहीं सामने आ सकी है।

छुई खदान धंसने से दबकर 2 ग्रामीणों की मौत

छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में छुई मिट्टी निकालने गए दो लोग खदान धंस जाने से मलबे में दब गए, उन्हें जब तक बाहर निकाला गया, दोनों की मौत हो गई। सूचना पर कुन्नी पुलिस मौके पर पहुंची। दोनों के शव बरामद कर लिए गए हैं। मामला लखनपुर थाना क्षेत्र के जमदरा का है।

जानकारी के मुताबिक, हीरामन यादव और शिवा यादव अन्य साथियों के साथ गांव से एक किलोमीटर दूर छुई मिट्टी निकालने पहुंचे थे। दोनों मिट्टी के टीले के नीचे सुरंगनुमा खदान के अंदर घुसे थे। दोनों अंदर छुई मिट्टी खोद रहे थे। इसी दौरान ऊपर का हिस्सा गिर गया। दोनों मिट्टी के बड़े ढेर में दब गए। हीरामन और शिवा यादव के साथ छुई मिट्टी निकालने गए अन्य युवकों ने शोर मचाया। सूचना पर लोग बड़ी संख्या में मौके पर पहुंचे। ऊपर की मिट्टी हटाने का काम शुरू किया गया। जब तक मिट्टी हटाकर दोनों को बाहर निकाला गया, दोनों की मौत हो गई थी।

सूचना पर कुन्नी पुलिस मौके पर पहुंची और शवों का पंचनामा किया। ग्रामीणों ने बताया कि जमदरा में जहां हादसा हुआ, वहां बड़ी संख्या में लोग छुई मिट्टी निकालते हैं। मौसम साफ होने के बाद लोग रोज छुई मिट्टी निकाल रहे थे। इसके कारण नीचे सुरंग बन गई थी। एक माह पहले सूरजपुर जिले के गेतरा में छुई मिट्टी निकालने के दौरान 2 महिलाएं और एक युवती दब गई थी, जिनमें से 2 को सुरक्षित बाहर निकाला लिया गया था, लेकिन युवती फुलकुंवर अंदर दब गई थी, जिसकी मौके पर मौत हो गई थी। संभाग में कई छुई खदान खतरनाक स्थिति में हैं।आदिवासी बाहुल्य इलाके में छुई मिट्टी का उपयोग कच्ची दीवारों की पोताई के लिए किया जाता है। घरों की पोताई के साथ छुई मिट्टी बेची भी जाती है। इस कारण यह आजीविका का भी साधन है। सरगुजा संभाग में इसके पहले भी छुई मिट्टी की खदान में दबने से मौत के मामले सामने आ चुके हैं।

हरियाणा में झूठ की घुट्टी पर विकास की गारंटी पड़ी भारी, वोट शेयर के हिसाब से

जम्मू कश्मीर में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी : पीएम मोदी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हरियाणा विधानसभा चुनाव में मिली बड़ी जीत और जम्मू कश्मीर में पार्टी का जनाधार बढ़ने के उपलक्ष्य में पार्टी के राष्ट्रीय कार्यालय में आयोजित आभार कार्यक्रम में दोनों राज्यों की जनता के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पार्टी के वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज नवरात्रि का छठा दिन और मां कात्यायनी की आराधना का दिन है। मां कात्यायनी शेर पर विराजमान होकर हाथ में कमल को धारण किए हुए हम सभी को आशीर्वाद दे रही हैं। ऐसे पावन दिन हरियाणा में तीसरी बार लगातार कमल खिला है। हरियाणा के लोगों ने फिर कमाल कर दिया और कमल-कमल कर दिया है। गीता की धरती पर सत्य, विकास और सुशासन की जीत हुई है। हर जाति, हर वर्ग के लोगों ने भाजपा को वोट दिया है।

वहीं जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 हटने के बाद पहली बार हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा को सबसे ज्यादा वोट मिलने की उपलब्धि का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में दशकों के इंतजार के बाद आखिरकार शांतिपूर्वक चुनाव हुए, वोटों की गिनती हुई, नतीजे आए। ये भारत के संविधान की जीत है, भारत के लोकतंत्र की जीत है। जम्मू-कश्मीर में जितनी भी पार्टियां चुनाव लड़ रही थीं, उनमें वोट शेयर के हिसाब से भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है।

उन्होंने चुनाव जीतने वाले सभी उम्मीदवारों को और दोनों राज्यों के मतदाताओं को बधाई देते हुए भाजपा कार्यकर्ताओं को उनके तप और तपस्या के लिए नमन भी किया। हरियाणा की जनता के प्रति

आभार व्यक्त करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि हरियाणा में अब तक 13 चुनाव हुए हैं। इनमें से 10 चुनाव में हरियाणा के लोगों ने हर 5 साल के बाद सरकार बदली। लेकिन इस बार हरियाणा के लोगों ने जो किया है, वो अभूतपूर्व है। पहली बार ऐसा हुआ है कि 5-5 साल के दो कार्यकाल पूरा करने वाली किसी सरकार को हरियाणा में फिर से तीसरी बार मौका मिला है।

उन्होंने कहा कि आज हरियाणा में झूठ की घुट्टी पर विकास की गारंटी भारी पड़ी है। हरियाणा की जनता ने नया इतिहास रच दिया है। भाजपा दुनिया का सिर्फ सबसे बड़ा दल ही नहीं है, बल्कि भाजपा सबसे ज्यादा दिलों में भी बसी हुई है। हरियाणा में जनता ने विकास के मुद्दे पर भाजपा की हैट्रिक लगाई। भाजपा ने कांग्रेस के कुशासन से मुक्ति दिलाई, इसलिए गुजरात और मध्य प्रदेश की जनता दो दशक से भी ज्यादा समय से अपना आशीर्वाद बनाए हुए है।

हरियाणा सहित अन्य कई राज्यों में भाजपा की लगातार जीत का उदाहरण देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस सत्ता को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानती है। सरकार में न रहने पर कांग्रेस की हालत जल बिन मछली जैसी हो जाती है। इसलिए वो सरकार में आने के बाद देश और समाज को दांव पर लगाने से नहीं हिचकती। देश के ज्यादातर राज्यों के लोगों ने कांग्रेस के लिए नो एंट्री का बोर्ड लगा दिया है। पहले कांग्रेस सोचती थी कि वो चाहे काम करे या न करे, लोग तो उसको वोट देंगे ही। लेकिन अब कांग्रेस की पोल खुल चुकी है। उसका डिब्बा गोल हो चुका है। उन्होंने कहा कि एक बार फिर से यह साफ हो गया है कि कांग्रेस पूरी तरह परजीवी पार्टी बन गई है। हरियाणा में कांग्रेस अकेले चुनाव लड़ी तो साफ हो गई, वहीं जम्मू कश्मीर में उसकी सहयोगी पार्टी डर के मारे पहले से ही कह रही थी कि कांग्रेस की वजह से उसे नुकसान हो रहा है।कांग्रेस का परिवार दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों से नफरत करता है, उनसे चिढ़ता है। आज जब दलित, पिछड़े, आदिवासी शीर्ष स्थान पर जा रहे हैं, तो वे परेशान हो रहे हैं। कांग्रेस के इस शाही परिवार ने तो डंके की चोट पर कहा कि वो आरक्षण खत्म कर देंगे। दलितों और पिछड़ों का आरक्षण छीनकर कांग्रेस अपने वोट बैंक को देना चाहती है। हरियाणा में भी वो यही करने जा रही थी। कांग्रेस, भारत के समाज को कमजोर करके, भारत में अराजकता फैला कर देश को कमजोर करना चाहती है। इसलिए वो अलग-अलग वर्गों को भड़का रहे हैं, लगातार आग लगाने की कोशिश कर रहे हैं। देश ने देखा कि कैसे किसानों को भड़काने का प्रयास हुआ, लेकिन हरियाणा के किसानों ने उन्हें करारा जवाब दिया कि वो देश के साथ हैं, भाजपा के साथ हैं।

उन्होंने कहा कि वे विकसित भारत के लिए 4 स्तंभों - किसान, युवा, महिला और गरीब की चर्चा बार-बार करते हैं। जम्मू-कश्मीर हो या हरियाणा, हम इन्हीं चार स्तंभों के विकास के बलबूते पर विकसित भारत बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। इनको सशक्त करना ही भाजपा की प्राथमिकता है। उन्होंने कांग्रेस द्वारा देश की संवैधानिक संस्थाओं पर सवाल उठाने की निंदा करते हुए भारत के खिलाफ चल रहे अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्रों का भी जिक्र किया।

सरकार की कई उपलब्धियों का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने कांग्रेस और गांधी परिवार पर भी जमकर निशाना साधा। कार्यक्रम के समापन के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पार्टी अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के साथ अलग से बैठक भी की।

एजाज खान की मुश्किलें बढ़ीं

मुंबई (एजेंसी)। एक्टर एजाज खान एक बार फिर कानूनी पचड़े में फंसते नजर आ रहे हैं। एक्टर का विवादों से पुराना नाता रहा है और ये सभी जानते हैं। 2023 में एजाज 2021 के एक ड्रग केस के चलते हिरासत में लिए गए थे, लेकिन फिर उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया गया। लेकिन, अब एक्टर एक और मुश्किल में फंस गए हैं। मुंबई कस्टम की स्पेशल पोस्टल इंटेलिजेंस ब्रांच ने यूरोपीय देश से आने वाली एक कंसाइनमेंट को ट्रैक किया और पता चला कि ये कंसाइनमेंट इसे वीरा देसाई इंडस्ट्रियल एस्टेट में एजाज खान के ऑफिस में पहुंचाया गया है। इसके बाद अभिनेता एजाज खान एक बार फिर कथित नशीली दवाओं के मामले में फंस गए हैं। प्राथमिक रूप से मिली जानकारी के मुताबिक बीते मंगलवार अभिनेता एजाज खान के मुंबई में अंधेरी स्थित ऑफिस में कस्टम डिपार्टमेंट की तरफ से सर्च किया गया। दरअसल, एजाज खान के एक स्टाफ मेंबर को एनडीपीएस एक्ट के तहत गिरफ्तार कर लिया गया जिसके बाद कस्टम डिपार्टमेंट की तरफ से यह सर्च कंडक्ट की गई। कस्टम डिपार्टमेंट के सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक एजाज खान के जिस स्टाफ मेंबर ने लगभग 100 ग्राम स्ष्ठ ऑर्डर की वह उन्हीं के दफ्तर के पते पर था। यह ड्रग यूरोप से मंगाया गया था। जिसकी कीमत लगभग 30 से 35 लाख के आसपास बताई जा रही है।

चुनाव हारने पर ईवीएम को दोष देना कांग्रेस की आदत : जीतन राम मांझी

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा चुनाव में भाजपा को पूर्ण बहुमत मिला है। भाजपा लगातार तीसरी बार हरियाणा में सरकार बनाने में कामयाब रही है। भाजपा जहां इस जीत से गदगद है, वहीं कांग्रेस ने हार का ठीकरा ईवीएम पर फोड़ दिया है। हरियाणा विधानसभा चुनाव के परिणाम आने पर बुधवार को केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने बात की। उन्होंने कहा, हरियाणा में भाजपा की जीत का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को जाता है। मैं उनकी नीति की सराहना करता हूं। यहां की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों के साथ है। कांग्रेस ने हरियाणा चुनाव हार के बाद चुनाव आयोग और ईवीएम पर सवाल खड़े किए। इस पर पलटवार करते हुए जीतन राम मांझी ने कहा, कर्नाटक में ईवीएम सही था। जम्मू-कश्मीर में गठबंधन की सरकार बन रही है, वहां भी ईवीएम ठीक है। हरियाणा में चूंकि कांग्रेस हार गई तो ठीकरा ईवीएम पर फोड़ा जा रहा है। कांग्रेस के नेचर में है कि जहां जीतते हैं, वहां चुप रहना और जहां हारते हैं, वहां ईवीएम को लेकर बहाने ढूंढ़ते हैं। यही वजह है कि वे ईवीएम और चुनाव आयोग दोनों को दोषी ठहराते हैं। हमारा मानना है कि चुनाव आयोग ने उचित काम किया।

हरियाणा में बसपा जीरो पर आउट

लखनऊ (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव के बाद हरियाणा विधानसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी (बसपा) जीरो पर आउट हुई है। इसे लेकर बसपा मुखिया मायावती ने इसके लिए जाट समाज को जिम्मेदार ठराया है। उन्होंने कहा कि यूपी की तरह हरियाणा के जाट समुदाय को भी अपनी जातिवादी मानसिकता को बदलना चाहिए। बसपा मुखिया मायावती ने मंगलवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा कि हरियाणा विधानसभा चुनाव बीएसपी व इनेलो ने गठबंधन करके लड़ा, लेकिन आज आए परिणाम से स्पष्ट है कि जाट समाज के जातिवादी लोगों ने बीएसपी को वोट नहीं दिया, इससे बीएसपी के उम्मीदवार कुछ सीटों पर थोड़े वोटों के अंतर से हार गए, हालांकि बीएसपी का पूरा वोट ट्रांसफर हुआ। उन्होंने कहा कि यूपी के जाट समाज के लोगों ने अपनी जातिवादी मानसिकता को काफी हद तक बदला है और वे बीएसपी से एमएलए तथा सरकार में मंत्री भी बने हैं। हरियाणा प्रदेश के जाट समाज के लोगों को भी उनके पदचिन्हों पर चलकर अपनी जातिवादी मानसिकता को जरूर बदलना चाहिए। मायावती ने कहा कि मैं बीएसपी के लोगों द्वारा पूरी दमदारी के साथ यह चुनाव लड़ने के लिए उनका हार्दिक आभार प्रकट करती हूं व आश्वस्त करती हूं कि उनकी मेहनत बेकार नहीं जाएगी। लोगों को निराश नहीं होना है और न ही हिम्मत हारनी है, बल्कि अपना रास्ता खुद बनाने के लिए तत्पर रहना है, नया रास्ता निकलेगा।

आप ने दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए किया बड़ा ऐलान, कांग्रेस को दिया झटका

नई दिल्ली(एजेंसी)। हरियाणा और जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के परिणाम मंगलवार को जारी कर दिए गए हैं। हरियाणा में कांग्रेस को करारी हार मिली है तो वहीं, जम्मू-कश्मीर में भी पार्टी कुछ खास प्रदर्शन नहीं कर सकी। अब कांग्रेस की इस हार के बाद इंडी अलायंस के दलों की ओर से भी पार्टी पर जमकर निशाना साधा जा रहा है। अब आम आदमी पार्टी ने भी कांग्रेस को बड़ा झटका दिया है। आप की प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने कहा है कि पार्टी दिल्ली

विधानसभा चुनाव में अकेले ही मैदान में उतरेगी। आम आदमी पार्टी की राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने कहा है कि हम दिल्ली विधानसभा चुनाव अकेले लड़ेंगे। प्रियंका ने कांग्रेस पार्टी को ओवर कॉन्फिडेंट भी बता दिया। उन्होंने कहा कि एक तरफ अति आत्मविश्वास वाली कांग्रेस है और दूसरी तरफ अहंकारी बीजेपी है। प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि हमने दिल्ली में जो पिछले 10 साल में किया है उसके आधार पर चुनाव लड़ेंगे। आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भी मंगलवार को कहा कि हरियाणा में चुनाव परिणाम का सबसे बड़ा सबक ये है कि चुनावों में कभी भी अति आत्मविश्वासी नहीं होना चाहिए।

मनौरी कस्बे में अवैध पटाखा फैक्ट्री का भंडाफोड़, एक व्यक्ति गिरफ्तार

कौशांबी (एजेंसी)। कौशांबी जिले के पिपरी थाना क्षेत्र अंतर्गत मनौरी बाजार में पुलिस ने अवैध पटाखा फैक्ट्री का भंडाफोड़ किया है। पुलिस की संयुक्त टीम ने छापेमारी के दौरान भारी मात्रा में अवैध पटाखे और विस्फोटक सामग्री जब्त की है। इस दौरान एक युवक को हिरासत में लिया गया, जिससे पुलिस पूछताछ कर रही है। गौरतलब है कि एक साल पहले इसी क्षेत्र में स्थित अवैध पटाखा फैक्ट्री में भयानक विस्फोट हुआ था, जिसमें कई लोगों की मौत हो गई थी। उस घटना के बाद से पुलिस लगातार सतर्क थी, और पिछली घटना को ध्यान में रखते हुए इस बार कड़ी कार्रवाई की गई है। पुलिस की यह कार्रवाई क्षेत्र में अवैध गतिविधियों पर नकेल कसने के प्रयासों का हिस्सा है। अवैध पटाखा फैक्ट्री को लेकर स्थानीय निवासियों में भी डर और चिंता बनी हुई थी, और इस कार्रवाई से जनता को राहत मिली है। फिलहाल पुलिस हिरासत में लिए गए युवक से पूछताछ कर रही है, ताकि अवैध पटाखा फैक्ट्री से जुड़े अन्य लोगों और नेटवर्क का पता लगाया जा सके। पुलिस ने कहा कि मामले की गहन जांच की जा रही है और दोषियों को कड़ी सजा दिलाने का प्रयास किया जाएगा। इस कार्रवाई से पिपरी थाना क्षेत्र में अवैध गतिविधियों पर रोकथाम की उम्मीद है, और जनता को भी पुलिस की त्वरित कार्रवाई पर भरोसा हुआ है।

हरियाणा में कांग्रेस की हार पर राघव चड्ढा का तंज, कहा- अगर साथ-साथ चलते तो कुछ और बात होती

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी (आप) के राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली हार पर शायराना अंदाज में तंज कसा। आप सांसद राघव चड्ढा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, हमारी आरजू की फिक्र करते तो कुछ और बात होती, हमारी हसरत का ख्याल रखते तो एक अलग शाम होती, आज वो भी पछता रहा होगा मेरा साथ छोड़कर, अगर साथ-साथ चलते तो कुछ और बात होती। उन्होंने इशारों में इशारों में यह कहने की कोशिश की है कि अगर हरियाणा में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने गठबंधन कर चुनाव लड़ा होता, तो आज हम जीत का परचम लहरा चुके होते, मगर अफसोस ऐसा नहीं हो सका।

बता दें कि हरियाणा विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच गठबंधन होने की चर्चा जोरों पर थी। इस संबंध में कई बैठकें भी हुईं, लेकिन वह सार्थक नहीं हो सकी। इसके बाद दोनों पार्टियों ने अपनी राहें जुदा करते हुए अकेले ही चुनाव लड़ने का फैसला किया, जिसका नतीजा यह हुआ कि न ही कांग्रेस हरियाणा चुनाव में कुछ खास कर सकी और आम आदमी पार्टी की दुर्गति का अंदाजा महज इसी से लगाया जा सकता है कि यह पार्टी राज्य में अपना खाता भी नहीं खोल सकी।

इससे पहले, आम आदमी पार्टी के हरियाणा इकाई के प्रदेश अध्यक्ष सुशील कुमार गुप्ता ने भी आईएएनएस से बातचीत में कहा, अगर दोनों ही पार्टियों ने गठबंधन कर चुनाव लड़ा होता, तो आज हम 70 से ज्यादा सीटों पर जीत का परचम लहरा चुके होते।

उन्होंने कहा, जब राष्ट्रीय स्तर पर हमने (आम आदमी पार्टी) कांग्रेस के साथ गठबंधन किया था, तो भारतीय जनता पार्टी को बैसाखियों पर ला दिया था। इसी तरह मुझे पूरा विश्वास है कि अगर हमने हरियाणा विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस के साथ गठबंधन किया होता, तो हम निश्चित तौर पर 70 से ज्यादा सीटों पर जीत दर्ज करने में सफल रहते।

बिहार में बाढ़ की स्थिति गंभीर, 16 जिलों के 4 लाख लोग प्रभावित, कोसी का जलस्राव घटा

पटना (एजेंसी)। बिहार में कोसी और गंडक सहित सभी प्रमुख नदियां उफान पर हैं। हालांकि, राहत वाली बात है कि वीरपुर के कोसी बैराज, वाल्मीकिनगर के गंडक बैराज पर जलस्राव में कमी आयी है। प्रदेश के 16 जिलों के 31 प्रखंड के चार लाख से अधिक लोग बाढ़ से प्रभावित हैं। जल संसाधन विभाग के मुताबिक, वीरपुर बैराज में कोसी का जलस्राव सोमवार को सुबह छह बजे 2,65,530 क्यूसेक था जबकि 10 बजे यह घटकर 2,54,385 क्यूसेक हो गया है। इसी तरह वाल्मीकिनगर बैराज में सुबह 10 बजे गंडक का जलस्राव

भी 1,55,600 लाख क्यूसेक है। इस बीच, प्रदेश की सभी प्रमुख नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। आपदा प्रबंधन विभाग के अनुसार, गंडक, कोसी, बागमती, महानंदा एवं अन्य नदियों के जलस्तर में हुई वृद्धि के कारण 16 जिलों पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण, अररिया, किशनगंज, गोपालगंज, शिवहर, सीतामढ़ी, सुपौल, सिवान, मधेपुरा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, मधुबनी, दरभंगा, सारण एवं सहरसा के 31 प्रखंडों में 152 ग्राम पंचायतों के अंतर्गत लगभग 4 लाख से अधिक की आबादी बाढ़ से प्रभावित हुई है।

संक्षिप्त समाचार

फ्रांस और भारत मिलकर वैमानिकी संकुल विकसित करेंगे

नई दिल्ली। भारत में फ्रांस के राजदूत थिएरी मथौ ने सोमवार को कहा कि फ्रांस और भारत एयरोस्पेस क्षेत्र में अपने सहयोग को बढ़ाने पर काम कर रहे हैं और उनकी एक वैमानिकी संकुल (एयरोनॉटिक्स क्लस्टर) विकसित करने की योजना है। फ्रेंच एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज एसोसिएशन (जीआईएफएएस) द्वारा राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित सम्मेलन में उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच साझेदारी न केवल रणनीतिक बल्कि सार्वभौमिक है। भारत और फ्रांस के बीच एयरोस्पेस, रक्षा और अन्य क्षेत्रों में दीर्घकालिक साझेदारी है। उन्होंने कहा कि 2024 की पहली छमाही में फ्रांसीसी एयरोस्पेस कंपनियों का देश में निर्यात 2.7 अरब यूरो रहा। मथौ ने कहा कि फ्रांस और भारत एक वैमानिकी संकुल के साथ-साथ वैमानिकी तथा अंतरिक्ष के लिए एक इंडो-फ्रेंच परिसर भी विकसित करेंगे। संकुल प्रस्ताव पर विस्तृत जानकारी तुरंत मुहैया नहीं कराई गई। उन्होंने कहा कि भारत के परिवहन को कार्बन मुक्त करने और सतत विमानन ईंधन (एसएएफ) विकसित करने के लक्ष्य का फ्रांस समर्थन करेगा।

हिताची एनर्जी करेगी 2000 करोड़ का निवेश

नई दिल्ली। हिताची एनर्जी ने

भारतीय कारोबार के 75 साल पूरे होने पर देश में स्थायी ऊर्जा भविष्य को बढ़ावा देने के लिए अपनी क्षमता, प्रोडक्ट रेंज और टैलेंट बेस को विस्तार करने पर लगभग 2000 करोड़ रुपये का निवेश करने की योजना बनाई हैद्य। पिछले 75 सालों में भारत की कई महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं में योगदान देते हुए हिंदुस्तान इलेक्ट्रिक से लेकर हिंदुस्तान ब्राउन बॉवेरी, एबीबी पावर ग्रिड्स, हिताची एबीबी पावर ग्रिड्स और अब हिताची एनर्जी बनने तक इस कंपनी ने 1949 से देश के ऊर्जा क्षेत्र के विकास में अहम भूमिका निभाई है। अपनी इस उपलब्धि का जश्न मनाने के लिए कंपनी एनर्जी एंड डिजिटल वर्ल्ड 75 नाम से सोमवार से दो दिन का टेक्नोलॉजी इवेंट आयोजित किया है। इसमें भारत के नेट-ज़ीरो लक्ष्य की ओर बढ़ने में मदद करने वाली नई तकनीकों पर चर्चा की जा रही है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हाल ही में भारत के जी20 शेरपा अमिताभ कांत, हिताची एनर्जी के ग्लोबल सीईओ एंड्रियास शियरेनबेक और हिताची एनर्जी इंडिया के प्रबंध निदेशक और सीईओ एन वेणु ने किया। इस अवसर पर वेणु ने कहा कि इस खास साल को यादगार बनाने के लिए, हिताची एनर्जी इंडिया लिमिटेड अगले चार से पांच सालों में लगभग 2000 करोड़ रुपये का निवेश करने की योजना बना रही है। यह निवेश भारत के दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की संभावनाओं को ध्यान में रखकर किया जा रहा है।

अभी तेज गेंदबाजी से अधिक निरंतरता पर ध्यान दे रहे मयंक यादव

ग्वालियर। युवा तेज गेंदबाज मयंक यादव ने कहा है अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निरंतरता जरूरी है। इसलिए वह अभी उसी पर ध्यान दे रहे हैं हालांकि गेंद की गति भी हमेशा से ही उनके दिमाग में रही है। मयंक ने चोट से वापसी के बाद बांग्लादेश के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज के पहले ही टी 20 मुकाबले में शानदार प्रदर्शन किया था। इस तेज गेंदबाज ने कहा कि तेज गति से वह प्रभावित रहे हैं पर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में फिटनेस बनाये रखने के लिए अभी वह सिर्फ निरंतरता पर ध्यान दे रहे हैं। इस साल आईपीएल में 150 किलोमीटर प्रति घंटा से अधिक की गति से गेंदबाजी कर रिकार्ड बनाने वाले इस गेंदबाज ने अपनी गति से बांग्लादेश के बल्लेबाजों पर अंकुश लगा दिया था। उनका पहला ओवर मेडन रहा। उन्होंने अपने चार ओवर 14 डॉट गेंद डाली और 21 रन देकर एक विकेट हासिल किया। मयंक ने कहा, 'मैं डेब्यू को लेकर उत्साहित था पर थोड़ा घबराया भी हुआ था। इसका कारण है कि पिछले कुछ समय में मुझे प्रतिस्पर्धी क्रिकेट खेलने के अधिक अवसर नहीं मिले थे और अचानक ही मुझे भारतीय टीम से बुलावा आ गया। मुझे मौका मिला। मैं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदार्पण कर रहा था इसलिए थोड़ा घबराया हुआ था। आईपीएल में लखनऊ सुपरजायंट्स के लिए खेलते हुए लगातार दो मैचों में मैन ऑफ द मैच रहे मयंक को पेट की मांसपेशियों में खिंचाव के कारण बाहर होना पड़ा था। मयंक जानते है कि उन्हें पहचान तेज गेंदबाजी से मिली है, इसलिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मे बने रहने के लिए वह लाइन व लेंथ में निरंतरता जरूरी मानते हैं। उन्होंने कहा, 'मेरी गति हमेशा मेरे दिमाग में रहती है पर अपनी आईपीएल यात्रा के दौरान मैंने सीखा है कि इस प्रारूप में और खासकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निरंतरता सबसे अहम है। इस गेंदबाज ने कहा, 'लाइन और लेंथ महत्वपूर्ण हैं। लगातार सही लाइन और लेंथ से गेंदबाजी करने से वास्तव में मदद मिलती है क्योंकि बल्लेबाज खुलकर नहीं खेल पाते हैं। मैं अपनी लाइन और लेंथ को सटीक रखने पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहा हूं। मयंक ने कहा कि उनके लिए चोट से उबरने के दौरान पिछले चार महीने काफी चुनौतीपूर्ण थे। उन्होंने कहा, 'मेरी चोट के दौरान का समय वास्तव में कठिन था क्योंकि पिछले चार महीनों में मुझे कई चरणों से गुजरना पड़ा, उतार-चढ़ाव देखना पड़ा। आईपीएल के दौरान उन्होंने लेंथ और अत्यधिक गति पर ध्यान केंद्रित किया लेकिन बांग्लादेश के खिलाफ इस गेंदबाज ने धीमी गेंदों को भी फेंका। उन्होंने कहा, 'मैंने आईपीएल के दौरान धीमी गेंदों का अधिक उपयोग नहीं किया क्योंकि उनकी वास्तव में आवश्यकता नहीं थी। साथ ही कहा कि पिच से अगर मदद मिले तो मैं ज्यादा विविधता पर ध्यान नहीं देता हूं।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में हेड को सलामी बल्लेबाज के तौर पर न भेजें: इयान चैपल

सिडनी। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच अगले माह शुरु हो रही बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को लेकर दिग्गज क्रिकेटरों की बयानबाजी जारी है। इसी कड़ी में आज ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान इयान चैपल ने कहा है कि इस सीरीज में ट्रेविस हेड को पारी की शुरुआत के लिए नहीं भेजा जाना चाहिये। चैपल ने पांच मैचों की टेस्ट सीरीज से पहले ऑस्ट्रेलियाई टीम को सुझाव दिया है कि वह इस प्रकार की गलती नहीं करे। चैपल का मानना है कि हेड एकदिवसीय और टी20 में एक जबरदस्त सलामी बल्लेबाज हैं पर टेस्ट क्रिकेट इससे अलग है और उन्हें इसका कम ही अनुभव है। गौरतलब है कि डेविड वॉर्नर के संन्यास के बाद ऑस्ट्रेलिया को उनकी जगह पर सलामी बल्लेबाज के तौर पर अभी तक कोई अच्छा बल्लेबाज नहीं मिल पाया है। इस कारण स्टीवन स्मिथ और हेड पारी की शुरुआत कर रहे हैं। स्मिथ सलामी बल्लेबाज के तौर पर अब तक सफल नहीं हुए हैं। सलामी बल्लेबाज के तौर पर उनका औसत 30 से भी कम रहा है, जबकि नंबर तीन और चार पर वे 60 से ज्यादा के औसत से खेलते रहे हैं। वहीं हेड इस समय ऑस्ट्रेलिया के सबसे बड़े मैच विजेता खिलाड़ियों में शामिल हैं। खासकर भारत के खिलाफ उनका रिकॉर्ड शानदार रहा है। आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप 2023 का फाइनल हो या विश्व कप 2023 फाइनल हो हेड की बदौलत ही ऑस्ट्रेलियाई टीम जीत रही है। इसके बाद भी इयान चैपल नहीं चाहते हैं कि हैड बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में शुरुआत करें । इस पूर्व कप्तान ने कहा कि हेड एकदिवसीय और टी20 क्रिकेट दोनों में नई गेंद का सामना करने में बेहद प्रभावी साबित हुए हैं। अपनी अत्यधिक आक्रामक शैली से वह खेल को बदल देते हैं पर टेस्ट क्रिकेट एकदम अलग है। इसमें आपको संयम के साथ खेलना होता है। चैपल ने कहा कि, जसप्रीत बुमराह को परेशान करने के लिए सभी कह रहे हैं कि हेड से पारी शुरु करायें। साथही कहा कि बुमराह और कुछ हद तक मोहम्मद सिराज अपनी आक्रामक मानसिकता को बदलेंगे से संभावना कम ही है।

मिस्ट्री स्पिनर के तौर पर जाने जाते हैं वरुण

नई दिल्ली। मिस्ट्री स्पिनर के नाम से लोकप्रिय वरुण चक्रवर्ती ने भारतीय टीम में शानदार वापसी की है। वरुण ने बांग्लादेश के खिलाफ टी20 मैच में 31 रन देकर 3 विकेट लिए और बल्लेबाजों को कोई अवसर नहीं दिया। वरुण की लेग स्पिन गेंदबाजी के सामने बांग्लादेश के बल्लेबाज बेबस नजर आये। वरुण ने पहले साल 2021 में स्कॉटलैंड के खिलाफ एक मैच विश्वकप में खेला था। वरुण खेल के साथ ही पढ़ाई में भी आगे रहे। वह आर्किटेक्ट हैं पर क्रिकेट के जुनून के कारण उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी। उन्होंने चेन्नई के एक कॉलेज से आर्किटेक्चर में डिग्री हासिल की और बतौर फ्रीलांस आर्किटेक्ट नौकरी करने लगे थे पर उनका मन क्रिकेट से दूर नहीं रह पाया और सब कुछ छोड़कर वह खेल में उतर गये। वरुण ने तीन तक टीम में वापसी के लिए खास संघर्ष किया। उन्होंने घरेलू क्रिकेट के साथ ही आईपीएल में अच्छा प्रदर्शन कर अपनी दावेदारी पेश की। वरुण ने 13 साल की उम्र में क्रिकेट में खेलना शुरू किया था। 17 साल की उम्र तक वरुण विकेटकीपर के तौर पर खेलते रहे। शुरुआत में वह टेनिस गेंद से क्रिकेट खेलते थे। उसके बाद उन्होंने तेज गेंदबाजी शुरु की पर चोटिल होने के कारण वह फिर वह स्पिन गेंदबाजी करने लगे। वरुण को रहस्यमयी स्पिनर इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनकी सभी छह गेंदें अलग अलग तरह की होती हैं। वह लेग ब्रेक, ऑफ ब्रेक, गूगली, कैरम बॉल, फ्लिपर, यॉर्कर और स्पिन भी करते हैं। वरुण ने अब तक 7 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 5 विकेट लिए हैं। वह घरेलू क्रिकेट में तमिलानाडु की ओर से खेलते हैं। इस स्पिनर ने साल 2018 में तमिलनाडु की ओर से रणजी ट्रॉफी में डेब्यू किया था। इसके बाद वह आईपीएल में उन्होंने किंग्स इलेवन और कोलकाता नाइटराइडर्स की ओर से खेला था।

युवराज ने की अभिषेक की खिंचाई दिमाग का सही इस्तेमाल करें

ग्वालियर। युवा सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा बांग्लादेश के खिलाफ पहले टी20 मैच में अच्छी शुरुआत के बाद भी बड़ी पारी नहीं खेल पाये। अभिषेक 7 गेंदों पर 16 रन बनाकर रन आउट हो गए। इससे वह बेहद निराश नजर आये। अभिषेक ने सोशल मीडिया में पोस्ट साझा कर लिखा, हर रन, हर गेंद-यह सब टीम के लिए है। इसी को लेकर पूर्व ऑलराउंडर युवराज सिंह ने भी उनकी खिंचाई की है। युवराज ने लिखा कि हमें दिमाग का सही इस्तेमाल करना चाहिये। गौरतलब है कि

कुछ समय पहले ही अभिषेक ने अपना पहला टी20 शतक लगाया था। बीसीसीआई द्वारा जारी एक वीडियो में अभिषेक ने शतक के बाद युवराज सिंह के साथ अपनी बातचीत के बारे में बताया था, जिसमें उन्होंने कहा था कि जब वह शून्य पर आउट हुए थे तो युवराज बहुत खुश थे। उन्होंने कहा था, उन्होंने कहा कि मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन जब मैं शून्य पर आउट हुआ तो वह बहुत खुश थे। उन्होंने कहा कि यह एक अच्छी शुरुआत है। मुझे लगता है कि उन्हें मेरे परिवार की तरह ही मुझ पर बहुत गर्व होना चाहिए। युवराज और अभिषेक के बीच का रिश्ता काफी गहरा है। ये ऐसा ही है जो एक पूर्व और एक मौजूदा भारतीय क्रिकेटर के बीच होता है। अभिषेक ने एक वीडियो में कहा था, मैं उनकी वजह से इस स्तर पर खेल रहा हूं। उन्होंने मुझ पर बहुत मेहनत की है।

कोयले से बिजली उत्पादन पूरी तरह समाप्त करने वाला पहला देश बना इंग्लैंड

नई दिल्ली (ईएमएस)। इंग्लैंड ने 1 अक्टूबर को अपने आखिरी कोयला-आधारित पावर प्लांट को बंद कर दिया, जिससे वह जी7 देशों में कोयले से बिजली उत्पादन को पूरी तरह समाप्त करने वाला पहला देश बन गया। यूके में चार मुख्य क्षेत्र शामिल हैं इंग्लैंड, नॉर्दर्न आयरलैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स। यूके ने धीरे-धीरे कोयले के उपयोग को कम करने के लिए गैस-आधारित बिजली उत्पादन और कार्बन उत्सर्जन पर जुर्माने का सहारा लिया। इस सदी की शुरुआत से यूके ने किसी भी नए कोयला-आधारित क्षमता का जोड़ नहीं किया है। इसकी तुलना में चीन ने 2000 के बाद से वैश्विक स्तर पर जोड़ी गई 1,588.5 गीगावाट

कोयला-संचालित क्षमता का 69 प्रतिशत हिस्सा अपने नाम किया है। यह आंकड़ा वैश्विक ऊर्जा मॉनिटर के अनुसार सभी देशों में सबसे अधिक है। भारत इस क्षेत्र में दूसरे स्थान पर है, जिसने कुल वैश्विक क्षमता में 12 फीसदी की वृद्धि की है। भारत ने 2000 से अब तक जो कोयला क्षमता जोड़ी है, उसमें से 29 प्रतिशत 2015 के पेरिस समझौते के बाद जोड़ी गई है। हालांकि, चीन ने इस अवधि में भारत की तुलना में पांच गुना अधिक कोयला क्षमता जोड़ी है। जर्मनी ने 1.1 गीगावाट कोयला क्षमता जोड़ी है, जबकि अमेरिका ने 2016 के बाद से कोई नया कोयला पावर प्लांट नहीं बनाया है और उसके शुद्ध जोड़ नकारात्मक रहे हैं। भारत का कोयले से मुक्ति की योजना धीमी गति से चल रही है। अगले 15 वर्षों में भारत केवल 1 गीगावाट से कम कोयला क्षमता कम करने की योजना बना रहा है। यह लक्ष्य विकसित अर्थव्यवस्थाओं और ब्रिक्स समूह के अन्य देशों की तुलना में काफी कम है। भारत को अपने कोयला उत्पादन में कमी लाने के लिए और अधिक तेज़ी से कार्य करने की आवश्यकता है।

आज करोड़ों की संपत्ति के मालिक हैं यशस्वी

नई दिल्ली। युवा क्रिकेटर यशस्वी जायसवाल आज भारतीय क्रिकेट के उभरते सितारे हैं। यशस्वी ने अपने शानदार प्रदर्शन से भारतीय क्रिकेट टीम में भी जगह बना ली है। वह टी20 और टेस्ट के एक बेहतरीन खिलाड़ी के तौर पर सामने आये हैं। आज यशस्वी के पास करोड़ों की संपत्ति है पर उनका यहां तक का सफर बेहद कठिन रहा है। यशस्वी आर्थिक रुप से एक बेहद कमजोर परिवार से आते हैं। एक समय क्रिकेट की बारिकियों को सीखने के लिए वह टेंट में भी रहे हैं हालांकि अभी वह क्रिकेट के कारण काफी अच्छी जिंदगी जी रहे हैं। वह अपनी कड़ी मेहनत के बल पर ही यहां तक पहुंचे हैं। यशस्वी ने आईपीएल में अपनी शानदार बल्लेबाजी के दम पर टीम इंडिया में जगह बनाई। वह आईपीएल में राजस्थान रॉयल्स की ओर से खेलते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार यशस्वी जायसवाल की इस साल

नेट वर्थ बढ़कर 16 करोड़ हो गई है। उन्होंने ये कमाई क्रिकेट के अलावा ब्रैंड के एंडोर्समेंट से की है। जायसवाल की मासिक आय करीब 35 लाख रुपये है जबकि सालाना आय 4 से 4.8 करोड़ के करीब है। कमाई का मुख्य जरिए उनका आईपीएल है। उन्हें आईपीएल से हर सत्र में राजस्थान रॉयल्स की ओर से 4 करोड़ मिलते हैं। यशस्वी जायसवाल के पिता भूपेंद्र जायसवाल की पेंट की दुकान है। वह बचपन में पिता का हाथ बंटाते थे. लेकिन उनका सपना क्रिकेटर बनने का था और उस सपने को लेकर वह 12 साल की उम्र में मुंबई पहुंच गये थे। यशस्वी को फरवरी 2024 में बीसीसीआई ने अपने सालाना अनुबंध के तहत बी कैटेगरी में रखा था। उन्हें बीसीसीआई से सालाना 3 करोड़ रुपये मिलते हैं। साल 2020 में यशस्वी ने राजस्थान रॉयल्स के साथ 2. 40 करोड़ में करार किया था जबकि 2022 में बढ़कर यह राशि 4 करोड़ पहुंच गई। क्रिकेट के मैदान पर शानदार प्रदर्शन करने के बाद यशस्वी की ब्रैंड वैल्यू भी बढ़ रही है। मौजूदा समय में वह कई बड़ी कंपनियों के विज्ञापनों में नजर आ रहे हैं. उनके पास बोट, जेबीएल इंडिया और फायरबोल्ट जैसी कंपनियों के विज्ञापन हैं। इससे उनकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ी है। यशस्वी के पास आज महिंद्रा थार, टाटा हारियर और मर्सिडीज बेंज सीएलए 200 जैसी कारें हैं। इसके अलावा उनके पास एक आलीशान घर भी है।

भारतीय टीम की जीत का श्रेय गंभीर नहीं रोहित को दें : गावस्कर

मुम्बई। महान क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने कहा है कि बांग्लादेश के खिलाफ दूसरे टेस्ट में जीत का श्रेय कोच गौतम गंभीर को नहीं कप्तान रोहित शर्मा को दिया जाना चाहिये। गावस्कर ने कहा कि रोहित की कप्तानी में भारतीय टीम पिछले कुछ साल में आक्रामक रणनीति से उतरते हुए जीत दर्ज कर रही है। रोहित के इस निडर प्रयास से टीम की शैली बदल रही है। गावस्कर ने कानपुर टेस्ट में भारत की जीत के लिए लिए गंभीर को अधिक मान्यता देने को गलत बताया है। साथ ही कहा कि ये एक प्रकार की चापलूसी है। गावस्कर ने लिखा, जबकि कप्तान बेन स्टोक्स और कोच मैकुलम के आने के बादद तहत इंग्लैंड की बल्लेबाजी का तरीका पूरी तरह से बदल गया, वहीं हमने पिछले कुछ वर्षों में देखा है कि रोहित भी इसी तरह से बल्लेबाजी कर रहे हैं और अपनी टीम को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। गंभीर को कोचिंग दिए हुए अभी कुछ महीने ही हुए हैं, इसलिए इस रवैये को गंभीर का बताना गलत है। साथ ही कहा कि गंभीर ने शायद ही कभी इस तरह से बल्लेबाजी की हो, जैसा मैकुलम किया करते थे। अगर कोई श्रेय दिया जाना

चाहिए, तो वह केवल रोहित को है और किसी और को नहीं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार इंग्लैंड के आक्रामक अंदाज के लिए बाजबॉल शब्द का प्रयोग हो रहा वह टेस्ट क्रिकेट के लिए अच्छा है। इसमें बल्लेबाज आउट होने का डर नहीं रखता और खुलकर खेलता है।

विराट, धवन सहित ये क्रिकेटर हैं शाकाहारी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट के कई स्टार क्रिकेटर शाकाहारी हैं। इनमें विराट कोहली से लेकर शिखर धवन , युजवेंद्र चहल और हार्दिक पंड्या व आर अश्विन के नाम हैं। ये क्रिकेटर एक समय मांसाहारी थी पर अपनी फिटनेस को बेहतर करने इन्होंने शाकाहार अपना लिया। पहले बात करें टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली की। विराट विश्व क्रिकेट में सबसे फिट खिलाड़ियों में से एक हैं। विराट की फिटनेस का राज उनका शाकाहारी होना है। विराट बादाम का दूध पीते हैं इसके अलावा दाल, पालक, किनोवा, हरी सब्जियां और डोसा खाते हैं। विराट कोहली फिटनेस के प्रति काफी जूनुनी हैं। इसके अलावा वह जिम में भी जमकर अभ्यास करते हैं। वह कभी भी शुगर और ग्लूटेन फूड्स को डाइट में शामिल नहीं करते हैं। वहीं हाल ही में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहने वाले धवन भी शाकाहारी हैं। इसके अलावा टीम के अनुभवी लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल ने भी शाकाहार अपनाया हुआ है। चहल ने भी फिटनेस के लिए शाकाहार अपनाया है। चहल अभी भारतीय टीम से बाहर होने के कारण इंग्लैंड में काउंटी क्रिकेट खेल रहे हैं। वहीं टीम इंडिया के स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या भी शाकाहारी। पंड्या ने भी अपनी फिटनेस बनाये रखने के लिए ही शाकाहार अपनाया है। पंड्या अभी

भारतीय टीम दूसरे टी20 में भी जीत का सिलसिला बनाये रखने उतरेगी

नई दिल्ली। सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में भारतीय क्रिकेट टीम बुधवार को यहां के अरुण जेटली स्टेडियम में बांग्लादेश के खिलाफ होने वाले दूसरे टी20 मैच को जीतकर सीरीज में अजेय बढ़त हासिल करना चाहेगी। भारतीय टीम ने ग्वालियर में हुआ पहला टी20 आसानी से जीत लिया था। अब मेजबान टीम का लक्ष्य अपनी जीत के सिलसिले को बनाये रखना रहेगा। वहीं दूसरी ओर मेहमान टीम बांग्लादेश भी अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ना चाहेगी पर उसके लिए भारतीय टीम से पार पाना आसान नहीं होगा। भारतीय टीम अब तक गेंदबाजी और बल्लेबाजी में उसे कहीं आगे रही है। प्रमुख

खिलाड़ियों को आराम दिए जाने के बाद भी भारतीय टीम ग्वालियर में पहले मैच में अंत तक हावी रही। इससे भारतीय टीम की मजबूत 'बेंच स्ट्रेंथ का पता चलता है। विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन इस मैच में बेहतर प्रदर्शन कर टीम में अपनी जगह पक्की करना चाहेंगे। सैमसन आमतौर पर मध्यक्रम में बल्लेबाजी करते हैं पर पहले मैच में उन्होंने पारी की शुरुआत की थी। वह 19 गेंद पर 29 रन ही बनाकर आउट हो गये थे। वहीं कप्तान सूर्यकुमार का कहना है कि सैमसन सीरीज में आगे भी पारी की शुरुआत करेंगे। वहीं सैमसन के साथ पारी की शुरुआत करने वाले अभिषेक शर्मा पिछले मैच में अच्छी शुरुआत को बड़े स्कोर में नहीं बदल पाए थे। यशस्वी जायसवाल और शुभमन गिल को आराम दिए जाने के कारण सैमसन और अभिषेक को खेलने का अवसर मिला है जिसका ये दोनो ही पूरा लाभ उठाना चाहेंगे। भारतीय टीम में किसी तरह के बदलाव की संभावना नहीं है। अपना पहला मैच खेल रहे तेज गेंदबाज मयंक यादव और ऑलराउंडर नीतीश रेड्डी ने ग्वालियर में शानदार प्रदर्शन किया था और ऐसे में वह टीम में बने रहेंगे। तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह ने तेज गेंदबाजी की कमान संभाली थी जबकि स्पिनर वरुण चक्रवर्ती ने तीन साल के बाद शानदार वापसी की थी। इसके अलावा ऑलराउंडर वॉशिंगटन सुंदर भी अपनी जगह पक्की करना चाहेंगे। वहीं दूसरी ओर बांग्लादेश की बात करें तो उसे जीत के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। पहले मैच में उसके बल्लेबाज विफल रहे थे। बांग्लादेश के कप्तान नजमुल हुसैन शंटो ने भी मैच के बाद स्वीकार किया था कि उनके बल्लेबाज रन नहीं बना पाये पर कहा कि इस मैच में उसकी टीम वापसी के सभी प्रयास करेगी।

दोनो ही टीमों के संभावित खिलाड़ी- भारत = सूर्यकुमार यादव (कप्तान), अभिषेक शर्मा, संजू सैमसन (विकेटकीपर), नितीश रेड्डी/तिलक वर्मा, हार्दिक पंड्या, रियान पराग, रिंकू सिंह, वाशिंगटन सुंदर, वरुण चक्रवर्ती, अर्शदीप सिंह, मयंक यादव।

मातृशक्ति के स्वस्थ्य और सशक्त होने पर परिवार रहेगा सुदृढ

राज्यमंत्री ने किया सोहावल और कोठी में मैदानी कार्यकर्ताओं के लिए स्वास्थ्य जांच शिविर का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने कहा कि मातृ शक्ति जब स्वस्थ्य और सशक्त होगी तभी परिवार और समाज भी सुदृढ होगा। राज्यमंत्री श्रीमती बागरी बुधवार को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सोहावल और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कोठी में आयोजित मैदानी स्तर के स्वास्थ्य एवं महिला बाल विकास विभाग के कार्यकर्ताओं के स्वास्थ्य जांच शिविर को संबोधित कर रही थी। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एलके तिवारी, जिला कार्यक्र म अधिकारी सौरभ सिंह, डीपीएम निर्मला पाण्डेय, सीबीएमओ डॉ. अल का मोहले, डॉ. ए. द्विवेदी, परियोजना अधिकारी अभय द्विवेदी, बृजेन्द्र सिंह, अवधेश सिंह, सुमित पाठक भी उपस्थित थे।

राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी की पहल पर मैदानी स्तर पर महिलाओं एवं बच्चों की स्वास्थ्य और पोषण की सेवा देने वाली विभागीय महिला कार्यकर्ताओं की स्वास्थ्य जांच के लिए शिविर लगाये जा रहे हैं। रैगांव विधानसभा में सोहावल, कोठी, शिवराजपुर, नागौद, रैगांव और सिंहपुर में इस तरह के 6 शिविर लगाये जायेंगे। राज्यमंत्री ने कहा कि महिलायें किसी भी परिवार की धुरी होती है। अपने पोषण और स्वास्थ्य की चिंता किये बगैर परिवार के प्रत्येक सदस्य का ख्याल रखती है। मैदानी क्षेत्र पर कार्य करने वाली एएनएम, आशा, आंगनवाडी कार्यकर्ता, सहायिका एवं अन्य विभागों की महिला कार्यकर्तायें जो ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सेवा कार्य में रहती है। उनके स्वास्थ्य की जांच के लिए मातृ सुरक्षा दिवस के अवसर पर इन शिविरों की शुरूआत की गई है। उन्होंने बताया कि मौजूदा समय की आम बीमारी ब्लड प्रेसर, सुगर, एनीमिया सहित ब्रेस्ट, सर्वाइकल, ओरल कैंसर की प्राथमिक जांच की सुविधा इन शिविरों में दी जा रही है। राज्यमंत्री ने कहा कि इन तीन प्रकार के कैंसर की जानकारी प्राथमिक स्टेज में हो जाने से इनका उपचार और निदान भी किया जा सकता है। उन्होंने सभी मैदानी कार्यकर्ताओं एवं महिलाओं से इन शिविरों में उपस्थित होकर स्वास्थ्य जांच की सुविधा का लाभ उठाने की अपील भी की। जिला कार्यक्र म अधिकारी सौरभ सिंह और मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एलके तिवारी ने जांच शिविर के उद्देश्यों एवं जांच उपचार के संबंध में जानकारी दी। सीवीएमओ अलका मोहले और डॉ. ए. द्विवेदी ने कहा कि मातृ सुरक्षा दिवस पर जांच शिविर महिलाओं को स्वास्थ्य और पोषण की सेवायें देने वाली कार्यकर्ताओं को सेवा देने का दिवस है। उन्होंने उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं से 5 प्रकार की स्वास्थ्य जांच अवश्य कराने की अपील की। राज्यमंत्री ने सिविल हास्पीटल सोहावल का निरीक्षण कर शिविर की व्यवस्था, महिलाओं के पंजीयन स्टाल एवं जांच के परिणामों की जानकारी भी ली।

सीबीएमओ अलका मोहले मातृ सुरक्षा दिवस के अवसर पर सोहावल में आयोजित स्वास्थ्य जांच शिविर में 157 और कोठी अस्पताल के शिविर में 270 मैदानी विभागीय कार्यकर्ताओं की स्वास्थ्य संबंधी 5 प्रकार की जांच की गई। कोठी के जांच शिविर में 122 रोगियों का नेत्र परीक्षण कर 35 लोगों को चश्मा वितरण किया गया तथा तीन मोतियाबिन्द रोगियों को सर्जरी के लिए रेफर किया गया। इनमें 38 की रक्त जांच, 41 का सुगर परीक्षण, 23 की एनीमिया जांच, 5 सर्वाइकल, 7 ओरल, 11 के ब्रेस्ट कैंसर सहित अन्य 23 परीक्षण किये गये। जिनमें से 3 महिलाओं में बीपी, 4 में डायबिटीज और 1 महिला एनीमिया के लक्षण पाये गये। कैंसर के किसी भी परीक्षण में कोई भी पॉजिटीव नहीं मिला। इसी प्रकार स्वास्थ्य केन्द्र सोहावल में कुल 157 व्यक्तियों के स्वास्थ्य परीक्षण में 36 नेत्र परीक्षण, 33 रक्त चाप परीक्षण में, 31 सुगर परीक्षण, 16 एनीमिया परीक्षण, 7 सर्वाइकल, 11 ओरल और 9 स्तन कैंसर तथा 14 अन्य जांचे की गई। जिनमें से 4 रोगियों को रक्त चाप, 3 रोगियों को डायबिटीज और 2 रोगियों को एनीमिया के लक्षण पाये गये। कैंसर की जांच में कोई भी रोगी पाजिटीव नहीं पाया गया।

निर्माण कार्य तय समय सीमा में अनिवार्य रूप से पूरे करें

कमिश्नर ने जल जीवन मिशन की दो समूह नलजल योजनाओं का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने सतना, रीवा तथा मैहर जिलों के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण किया। कमिश्नर ने मैहर जिले के ग्राम झिन्ना में जलजीवन मिशन के तहत बनाई जा रही दो समूह नलजल योजनाओं के कार्य का निरीक्षण किया। कमिश्नर ने रीवा बाणसागर समूह नलजल योजना, सतना बाणसागर-2 तथा सीधी बाणसागर समूह नलजल योजनाओं का निरीक्षण किया। कमिश्नर ने निर्माणाधीन इंटेक वेल तथा वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का निरीक्षण किया। कमिश्नर ने कहा कि जलजीवन मिशन से निर्माणाधीन सभी नलजल योजनाओं का कार्य पूरा होने के बाद संभाग के चार जिलों के हजारों गांवों को हर घर में नल से पानी मिलेगा। नलजल योजनाओं के कार्य की प्रगति अभी ठीक है। निर्धारित टाइमलाइन के अनुसार जनवरी 2025 तक सभी निर्माण कार्य पूरे कराएं। निर्माण कार्य में किसी भी तरह की बाधा आने पर तत्काल अवगत कराएं जिससे इन्हें दूर किया जा सके।

कमिश्नर ने कहा कि इंटेक वेल तथा वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का निर्माण पूरा होने के साथ इनमें पंप तथा अन्य मशीनों के संचालन के लिए बिजली की आवश्यकता होगी। परियोजना में प्रस्तावित विद्युत सब स्टेशन निर्माण के लिए कलेक्टर संबंधित एजेंसी को तत्काल जमीन उपलब्ध कराएं जिससे निर्माण कार्य शुरू किया जा सके। पेयजल की पाइपलाइन बिछाने के लिए जलजीवन मिशन तथा जल संसाधन विभाग के अधिकारी समन्वय से कार्य करें जिससे निर्मित संरचनाओं को किसी भी प्रकार की हानि पहुंचाए बिना पाइपलाइन बिछाने का कार्य हो सके। शीघ्र ही नलजल योजनाओं की प्रगति की योजनावार समीक्षा की जाएगी। निरीक्षण के समय कलेक्टर मैहर श्रीमती रानी बाटड, मुख्य अभियंता लोक निर्माण विभाग संजय खाण्डे, संयुक्त संचालक शिक्षा एसके त्रिपाठी, अधीक्षण यंत्री पीएचई एसएल धुर्वे, जिला प्रबंधक जल निगम रीवा चित्रांशु, जिला प्रबंधक सतना नीरव अग्रवाल, एसडीएम रामनगर आरती सिंह तथा निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

पुलिस की अभद्रता का शिकार हुआ पत्रकार, संगठनों ने खोला मोर्चा

सिविल लाइन थाने में किया विरोध प्रदर्शन, थाने से पुलिसकर्मी को हटाए जाने की मांग

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के सिविल लाइन थाने में तैनात मुंशी सतेंद्र तिवारी ने बुधवार को एक पत्रकार के साथ अभद्रता की घटना को अंजाम दिया। जिसके बाद पत्रकार संगठनों ने रोष व्याप्त हैं। जिले के तमाम पत्रकारों ने एकत्रित होकर सिविल लाइन थाने में विरोध प्रदर्शन किया है। बताया जा रहा है कि किसी घटना की सूचना पर कवरेज करने पहुंचे पत्रकार संदीप जाड़िया से थाने में तैनात मुंशी ने अभद्रता की जिसमें थाना प्रभारी सिविल लाइन कमलेश साहू ने भी उनका साथ दिया और पत्रकार के साथ मारपीट की घटना को अंजाम दिया। जिसके बाद पत्रकार संगठनों में रोष व्याप्त हो गया और थाना प्रभारी सहित मुंशी को थाने से हटाए जाने की मांग करते हुए पत्रकारों ने विरोध प्रदर्शन किया।

रोजगार मेले में 41 युवाओं को मिला रोजगार का अवसर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जिले के शासकीय मॉडल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नईगढ़ी में एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया। इसमें 41 युवाओं को विभिन्न शासकीय और अशासकीय कंपनियों में रोजगार का अवसर मिला। इस संबंध में उप संचालक रोजगार अनिल दुबे ने बताया कि रोजगार मेले में कुल 146 आवेदकों ने पंजीयन कराया था। विभिन्न कंपनियों ने मौके पर साक्षात्कार लेकर इनमें से 41 युवाओं का चयन किया। आईसेक्ट रीवा (डी एण्ड एचएलटीडी इलेक्ट्रानिक पीथमपुर) में 9, प्रगतिशील बायोटेक रीवा में 14, प्रगतिशील एग्रोटेक रीवा में 5, एचडीएफसी लाइफ इश्योरेन्स लि. रीवा में 12 तथा स्वतंत्र माइक्रोफिन प्राइवेट लि. में एक युवाओं को रोजगार का अवसर मिला है। मेले के आयोजन में जिला प्रशासन मऊगंज तथा महाविद्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों ने सराहनीय योगदान दिया।

कलेक्टर ने समय-सीमा प्रकरणों की बैठक में दिये निर्देश

सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों को प्रतिदिन कम करें

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मैहर कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभाकक्ष में बुधवार को कलेक्टर श्रीमती रानी बाटड़ ने समय-सीमा में सीएम हेल्पलाइन, जनसुनवाई एवं दूरभाष के माध्यम से प्राप्त शिकायतों की समीक्षा की। इस मौके पर अपर कलेक्टर शैलेंद्र सिंह, एसडीएम विकास सिंह, यस पाल मेहरा सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने कहा कि सभी विभागीय अधिकारी अगर सीएम हेल्पलाइन में लंबित प्रकरणों में से प्रतिदिन 10 शिकायतो को ध्यानपूर्वक पढ़कर संतुष्टि पूर्वक बंद कराने का प्रयास करें तो शिकायतें कम हो सकती है। लोक स्वास्थ्य कल्याण एवं पुलिस विभाग सहित कई विभागो की सीएम हेल्पलाइन नाट अटेंड शिकायतों की संख्या बढ़ती जा रही है। अगर इसी तरह विभागो द्वारा शिकायतों को नाट अटेंड किया जाता रहा तो एक दिवस वेतन काटने की कार्यवाही की जाएगी। कलेक्टर ने कहा सभी विभाग सीएम हेल्पलाइन में लंबित शिकायतो पर गंभीरता दिखाते हुए जनवरी 2024 से पूर्व के लंबित प्रकरणों का संतुष्टि पूर्वक निराकरण करे। कलेक्टर ने कहा कि जिस भी विभाग में अशासकीय सदस्यों वाली समिति का गठन किया जाना है। उनमें सभी जनप्रतिनिधियों के माध्यम से चर्चा कर समिति का गठन कर ले। जनसुनवाई एवं दूरभाष जनसुनवाई के माध्यम से प्राप्त शिकायतो की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने कहा की जनसुनवाई के माध्यम से प्राप्त शिकायतो के प्रतिवेदन पर कार्यवाही करते हुए जल्द निराकरण कर के शिकायतकर्ता को पत्र के माध्यम से संतुष्ट जवाब प्रस्तुत करने की कार्यवाही करें। कलेक्टर ने कहा कि नवरात्रि के बाद दो से तीन दिवस तक मूर्ति विसर्जन किया जाना है। जिले के सभी जनपद सीईओ एवं नगर पालिका सीएमओ अपने-अपने क्षेत्र के मूर्ति विसर्जन स्थल चिन्हित करते हुए वहां बिजली, पानी एवं सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम सुनिश्चित करें। सभी विभाग मूर्ति विसर्जन स्थल में ड्यूटी पर तैनात अधिकारी प्रतिनिधि का नाम और फोननंबर अवश्य भेजे, ताकि मौके पर संपर्क किया जा सके। कलेक्टर ने विद्युत विभाग को निर्देशित करते हुए कहा कि जिले भर में रावण दहन स्थलों का निरीक्षण करें। साथ ही विद्युत तारों को व्यवस्थित करने के निर्देश दिए।

पुरवा नहर क्रमांक 2 से सतना जिले में 45541 हेक्टेयर में सिंचाई का लक्ष्य

बाणसागर बांध की नहरों से रीवा संभाग के रीवा तथा सतना जिले के बड़े भू-भाग में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हुई हैं। इस बांध की पुरवा नहर र मांक दो से मुख्य रूप से सतना जिले में सिंचाई होती है। इस नहर से सतना जिले के विभिन्न ग्रामों में 45 हजार 541 हेक्टेयर क्षेत्र में आगामी फसल में सिंचाई की सुविधा दी जाएगी। इस संबंध में पुरवा नहर संभाग क्रमांक दो के कार्यपालन यंत्री आरएस नट ने बताया कि सिंचाई के लिए 32 हजार 387 हेक्टेयर में नहर के माध्यम से तथा 13 हजार 154 हेक्टेयर में पानी को लिफ्ट करके किसानों के खेतों तक पहुंचाया जाएगा। पुरवा नहर क्षेत्र के सभी किसान भाई 15 दिसम्बर 2024 से पहले नहर अधिकारी, सिंचाई निरीक्षक अथवा प्राधिकृत अमीन से रबी फसल की सिंचाई के लिए अल्प अवधि का अनुबंध अवश्य करा लें। जिन क्षेत्रों तक नहर के पानी की पहुंच है वहाँ के किसानों से अनुबंध स्वीकार किए जाएंगे। स्थाई भूमि धारकों से ही अनुबंध सिंचाई नियम 97 के प्रावधानों के तहत अनुबंध स्वीकार किए जाएंगे। डिफाल्टर किसानों के साथ अनुबंध नहीं किया जाएगा। किसानों को अपने खेतों तक पानी पहुंचाने के लिए नाली की समुचित व्यवस्था स्वयं करनी होगी। सभी किसानो से अपील की गई है कि फसल की उचित आवश्यकता के लिए ही पानी का उपयोग करें। पानी बहुमूल्य है, इसे बर्बाद होने से बचाएं। आपके द्वारा व्यर्थ किए गए पानी से किसी अन्य किसान के खेतों को नया जीवन मिल सकता है।

मिट्टी परीक्षण के क्षेत्र में रोजगार के लिए आवेदन 18 अक्टूबर तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास मनोज कश्यप ने बताया कि जिले में विकासखण्ड स्तर पर स्थापित मिट्टी परीक्षण प्रयोगशालाओं में युवा उद्यमियों, उद्यमियों, अशासकीय संस्थाओं एवं एफ0पी0ओ0 द्वारा मृदा नमूना परीक्षण कराये जाने के लिये मिट्टी परीक्षण प्रयोगशालाओं को युवा उद्यमियों/संस्थाओं को आवंटित किये जाने के लिए एमपी ऑनलाइन के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किये जायेंगे। आनलाइन आवेदन 4 अक्टूबर से 18 अक्टूबर 2024 तक पोर्टल िजजचः//ूएउचवदसपदमण्हवअण्पद पर स्वयं या एमपी ऑनलाइन के कियोस्क के माध्यम से आवेदन पत्र ऑनलाइन भरे जा सकते हैं। आवेदन प्रक्रि या के संबंध में अधिक जानकारी के लिये कार्यालय उप संचालक कृषि सतना में सम्पर्क कर सकते हैं। आवेदन की संक्षिप्त सूचना विभागीय वेबसाइट िजजचः//ूएउचातपीपण्उचण्हवअण्पद पर उपलब्ध है।

राज्यमंत्री 14 एवं 15 अक्टूबर को नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर में शामिल होंगी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रदेश की नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी रैगांव विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत 14 अक्टूबर को प्रातः 11 बजे ग्राम पंचायत भवन शिवराजपुर में एवं दोपहर 2 बजे जनपद पंचायत नागौद में महिला कर्मियों तथा आंगनवाडी कार्यकर्ता, सहायिका, आशा कार्यकर्ताओं सहित सभी महिलाओं के स्वास्थ्य जांच हेतु स्वास्थ्य कैंप में शामिल होंगी। इसी प्रकार राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी रैगांव विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत 15 अक्टूबर को प्रातः 11 बजे ग्राम पंचायत भवन रैगांव तथा दोपहर 2 बजे ग्राम पंचायत भवन सिंहपुर में महिला कर्मियों तथा आंगनवाडी कार्यकर्ता, सहायिका, आशा कार्यकर्ताओं सहित सभी महिलाओं के स्वास्थ्य जांच हेतु स्वास्थ्य कैंप में शामिल होंगी।

राज्य स्तरीय शालेय क्रीडा प्रतियोगिता का आयोजन 14 से 18 अक्टूबर तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिले में राज्य स्तरीय शालेय र ीडा प्रतियोगिता 14 अक्टूबर से 18 अक्टूबर तक विट्स करही सतना में बास्केटबाल का आयोजन किया गया है। जिसमें प्रतिभागियों की उम्र 19 वर्ष निर्धारित की गई है। कलेक्टर अनुराग वर्मा ने सभी संबंधित अधिकारियों को राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के संबंध में दिशा-निर्देश दिये हैं।

कमिश्नर ने सगौनी स्कूल का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मैहर जिले में भ्रमण के दौरान रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सगौनी का निरीक्षण किया। कमिश्नर ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए पठन-पाठन, स्कूल की व्यवस्थाओं, परीक्षा परिणाम तथा मध्यान्ह भोजन वितरण की जानकारी दी। कमिश्नर ने शाला परिसर में समुचित साफ-सफाई न होने पर प्रभारी प्राचार्य रवीन्द्र सिंह को कारण बताओ नोटिस देने के निर्देश दिए। कमिश्नर ने तीन माह से अनुपस्थित लैब टेक्नीशियन जयकुमार पाण्डेय को तत्काल प्रभाव से निलंबित करने के

निर्देश दिए। कमिश्नर ने मौके पर उपस्थित प्राचार्य तथा शिक्षकों को निर्देश देते हुए कहा कि स्कूल परिसर को साफ-सुथरा और व्यवस्थित रखें। विद्यार्थियों के पठन-पाठन तथा सामान्य ज्ञान में वृद्धि के लिए विशेष प्रयास करें। स्कूल में दैनिक समाचार पत्र उपलब्ध कराकर विद्यार्थियों को नियमित अध्ययन के लिए प्रेरित करें। बच्चों की शिक्षा सुधर गई तो उनका पूरा जीवन संवर जाएगा। इस अवसर पर कलेक्टर मैहर श्रीमती रानी बाटड, एसडीएम रामनगर आरती सिंह, संयुक्त संचालक शिक्षा एसके त्रिपाठी, जिला शिक्षा अधिकारी सतना नीरव दीक्षित तथा अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

विकासखण्ड स्तरीय रोजगार मेला 14 से 24 अक्टूबर तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। शासकीय आईटीआई सतना एवं जिला रोजगार कार्यालय सतना द्वारा सिक्योरिटी गार्ड/सुपरवाइजर/हाउस कीपिंग पद की भर्ती के लिये जिले की समस्त शासकीय आईटीआई संस्थाओं में एक दिवसीय प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजित किया जा रहा है। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि 14 जून से 24 अक्टूबर तक जिले की शासकीय आईटीआई संस्थाओं में अलग-अलग तिथियों में प्लेसमेंट ड्राइव आयोजित कर सिक्योरिटी सर्विस में सिक्योरिटी गार्ड/सुपरवाइजर/हाउस कीपिंग पद के लिये योग्य अभ्यर्थियों का चयन किया जायेगा। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि 14 अक्टूबर को शासकीय महाविद्यालय रामपुर बघेलान, 15 अक्टूबर को शासकीय आईटीआई रामनगर, 16 अक्टूबर को शासकीय आईटीआई नागौद, 18 अक्टूबर को शासकीय आईटीआई उचेहरा, 19 अक्टूबर को शासकीय आईटीआई मैहर, 21 अक्टूबर को शासकीय आईटीआई अमरपाटन, 22 अक्टूबर को शासकीय आईटीआई बिरसिंहपुर तथा 24 अक्टूबर को शासकीय आईटीआई सतना में प्रातः 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया जायेगा। जिसमें आयु 18 से 37 वर्ष आयुवर्ग तथा योग्यता 8वीं, 10वीं पास/फेल, 12वीं उत्तीर्ण बेरोजगार आवेदक अपने मूल रिकार्ड के साथ निर्धारित स्थान पर उपस्थित होकर योग्यता अनुसार रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

मैहर में महिला सम्मेलन कार्यक्रम में हुए शामिल सांसद

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सांसद गणेश सिंह ने कहा कि सरकार महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने का लगातार प्रयास कर रही है। मैहर जिले में आयोजित महिला सम्मेलन में स्व-सहायता समूहों की महिलाओं एवं लाडली बहना योजना की हितग्राहियों को सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी, जिलाध्यक्ष कमलेश सुहाने, नगर परिषद अध्यक्ष गीता संतोष सोनी उपस्थित रहे।

दवाओं का नशे के रूप में किसी भी हालत में दुरूपयोग न होने दें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नशामुक्त भारत अभियान के तहत कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने कहा कि रीवा जिले में मेडिकल नशा के विरूद्ध लगातार कार्यवाही की जा रही है। पुलिस द्वारा भारी मात्रा में नशीली दवाओं तथा सिरप को जब्त किया गया है। मेडिकल नशा तेजी से विकसित हो रहे रीवा जिले के लिए कलंक की तरह है। इससे पूरे जिले की छवि धूमिल हो रही है। इस कलंक को मिटाने के लिए किए जा रहे प्रयासों में मेडिकल एसोसिएशन तथा दवा विक्रेता पूरा सहयोग करें। दवाओं का नशे के रूप में किसी भी हालत में दुरूपयोग न होने दें। जिन दवाओं में ऐसे केमिकल्स का उपयोग होता है जिनसे नशा किया जा सकता है उन दवाओं की बिक्री की में सावधानी बरतें। डॉक्टर के पर्चे पर ही दवाएं दें। यदि कोई व्यक्ति ऐसी दवाएं लेने बार-बार आता है तो उसकी सूचना दें। बैठक में कलेक्टर ने

कहा कि कई दवा विक्रेता अनजाने में ही नशीली दवाओं के व्यापार में शामिल हो जाते हैं। चिकित्सा शिक्षा विभाग दवाओं की फैक्ट्री से लेकर वितरण होने तक कोड नम्बर से ट्रैकिंग की व्यवस्था शीघ्र ही शुरू कर रहा है। नशीली दवाओं तथा प्रतिबंधित दवाओं की बिक्री पर एक लाख रुपए तक के जुर्माने तथा 10 साल तक की सजा का प्रावधान है। दवा विक्रेता नशीली दवाओं की बिक्री किसी भी रूप में न करें। यदि कोई नशे का आदी व्यक्ति है तो प्रशासन उसके पुनर्वास के पूरे प्रयास करेगा। ऐसे व्यक्तियों की सूचना पुलिस अथवा सामाजिक न्याय विभाग को अवश्य दें। बैठक में ड्रग इंस्पेक्टर राधेश्याम बट्टी ने नारकोटिक्स एक्ट के प्रावधानों, ड्रग प्राइस कंट्रोल एक्ट के प्रावधानों की जानकारी दी। उन्होंने नशीली दवाओं की बिक्री में बरतने वाली सावधानियों की भी जानकारी दी। बैठक में अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनिल सोनकर, एसडीओपी उदित मिश्रा, संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ संजीव शुक्ला, मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष तरूणेन्द्र सिंह, सचिव आरके मिश्रा तथा अन्य पदाधिकारी, थोक एवं फुटकर दवा विक्रेता और स्टॉकिस्ट उपस्थित रहे।

50वां उस्ताद अलाउद्दीन खां समारोह के समापन कार्यक्रम आज

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी के संयोजन में जिला प्रशासन मैहर के सहयोग से 8 से 10 अक्टूबर, 2024 को स्टेडियम ग्राउंड, मैहर में किया जा रहा है। समारोह के तीसरे एवं अंतिम दिन 10 अक्टूबर को सायं 7 बजे से सर्वप्रथम मैहर वाद्य वृन्द द्वारा वाद्य वृन्द की प्रस्तुति, इसके बाद विदुषी कस्तूरी पटनायक एवं साथी, दिल्ली द्वारा ओडिसी समूह नृत्य, तत्पश्चात सुश्री संजुक्ता दास, कोलकाता द्वारा गायन की प्रस्तुति दी जावेगी। अगले र म में पं. शशांक सुब्रमणियम, चेन्नई द्वारा बांसुरी वादन और अंतिम प्रस्तुति सुश्री भद्रा सिन्हा एवं साथी, नई दिल्ली द्वारा भरतनाट्यम की होगी। कार्यक्र म में प्रवेश नि:शुल्क रहेगा। इस अवसर पर दो प्रदर्शनियां भी आयोजित की जा रही हैं, जिसके तहत ''देवी'' प्रदर्शनी के अंतर्गत 108 नाम रहस्यों पर आधारित लघु चित्रों की प्रदर्शनी और ''तंतु'' के अंतर्गत तार वाद्यों पर केन्द्रित प्रदर्शनी आयोजित की गई है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।